कल्प

ISBN: 978-93-82070-57-3

(साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक त्रैमासिक पत्रिका)

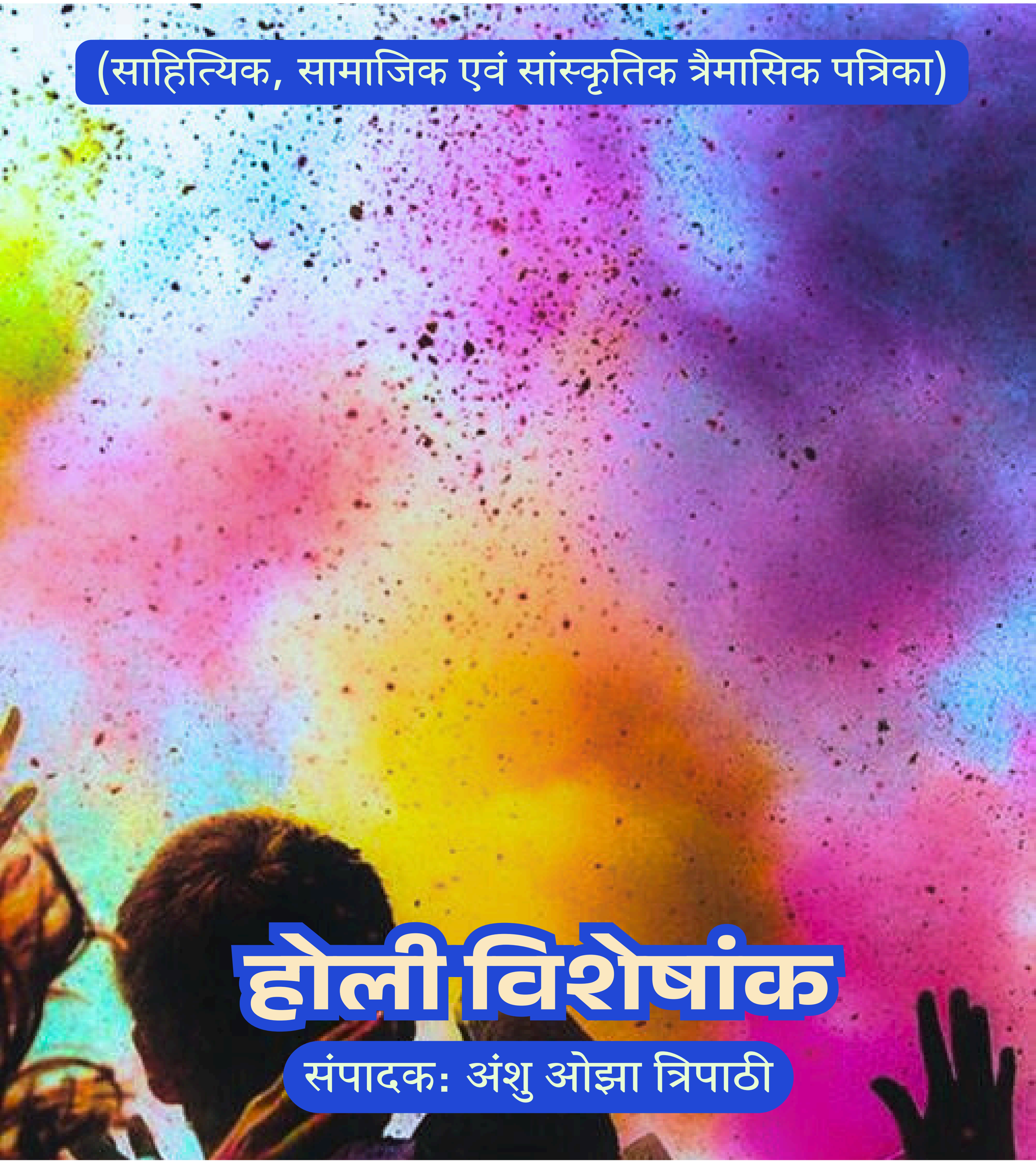

होली विशेषांक

संपादक: अंशु ओझा त्रिपाठी

www.kalp.ind.in | अंक २ | वर्ष २०२५ | (मार्च-मई)

विषय-सूची

1. सम्पादकीय - अंशु त्रिपाठी
2. होली की ग़ज़ल - शहनाज़ हसन
3. होली के व्यंजन - रश्मि शर्मा
4. विश्व प्रसिद्ध इंदौर की रंगपंचमी गेर - रत्नेश त्रिपाठी
5. पॉजिटिव ज़िन्दगी, रंग-भरी - निधि नित्या
6. होली मिलन (लघुकथा) - नीरू मित्तल
7. होली है भाई होली है - रमेश कुमार सोनी
8. बैकुनपुर की होली - कविता - पद्मनाभ मिश्रा
9. होली में भंग हास्य कविता - सुरेश चौधरी
10. होली की कविता - लालित्य ललित
11. होली के गीत - ओम प्रकाश नौटियाल
12. कृषक की होली - कविता- प्रताप गरब्याल
13. अमरपुर की अनोखी होली - सुनील कुमार
14. नवगीत - अशोक शर्मा
15. होली त्योहार :महत्व एवं प्रभाव -राजेश्वरी मंडोरा
16. लागा होली का रंग - डॉ मुकेश असीमित
17. फगुनारे गीत - सुश्री मिथिलेश बड़गैया
18. शिशिर की देहरी पर बसंत की दस्तक (आर्टिकल) - राजेंद्र सिंह
19. होली मनाओ पानी बचाओ - सुरेंद्र डोगरा
20. एक बार फिर बीत गया महिलाओं का दिन - डॉ जेनी शबनम
21. बरसाने की लट्ठमार होली रवीन्द्र पांडे
22. होली की कविता -सुनील गज्जाणी
23. ज्योतिष - बसंत सोनी
24. इंटरव्यू - अंशु त्रिपाठी. केतकी जानी
25. निरुपमा मिश्रा होली के दोहे
26. सर्वेश सिंह - होली त्योहार और इकोसिस्टम
27. शैलजा त्रिपाठी -हर्बल होली सेफ होली
28. कौशल उप्रेती*होली पर आलेख-बेरीनाग
29. होली पर कुण्डलियां -ज्योति सिंह
30. होली की ग़ज़ल - लव वर्मा
31. पाठकों के पत्र

संपादकीय

नमस्कार मित्रों!

मानव मन प्रेम में विश्वास करता है,यदि बसंत प्रेम के आदान प्रदान का मौसम है तो होली प्रेम के विश्वास को अटल रखने का पर्व!रंगने वाला प्रेम के विश्वास को अंजुरी में भरकर रंगता है।यह रंगना,रंग जाना प्रेम का शाश्वत चलना है।कल्प का विषय होली विशेषांक पर टिकी हुई है। रंग, ग़ुलाल, अबीर, पिचकारी, गुब्बारे, ढोल नगाड़े नाच और मृदंग! लाउड स्पीकर में रंग बरसे और होली खेले रघुबीरा अवध में अमिताभ बच्चन द्वारा गाये हुए मुहल्ले में बजने वाला गीत! गुझिया, दहीबड़े, मालपुआ और ठंडाई आदि भिन्न भिन्न विषय होली के लिए समाविष्ट करने का प्रयास है। लेकिन जहाँ होली मनाने में मज़ा भी आता है, वहीँ ज़हरीले कृत्रिम रसायनिक रंगों के साथ इस्तेमाल करने से नुकसान और बीमारियां भी होती हैं। देश में होलिका दहन और पानी के रंगों के कारण वायु प्रदूषण और जल समस्या भी होती है है, वहीँ इको फ्रेंडली होली के रंग ईंधन आदि भी भारत वासी भी आत्मसात भी कर चुके हैं। सारतत्व यही है कि देश में हर त्यौहार एवं हर देशवासी पर्यावरण ऋतुओं के अनुसार ढलने और सामंजस्य बना लेने की ठान चुके हैं क्योंकि उन्हें ज़िंदादिल,खुशमिजाज़ स्वस्थ बनना है और प्रगतिशील होना है।

होली पर्व की हार्दिक शुभकामनायें, मित्रों!

अंशु त्रिपाठी

सम्पादक

कल्प प्रकाशन

होली की ग़ज़ल

दोस्तो आज चलो मिल के मनाएं होली
प्यार के रंग में डूबी सी दिखाएं होली

फूल खेतों में बसंती जो महक उठे हैं
ले के ये आई है उल्फ़त की अदाएं होली

प्रेम के रंग से रंग डालो दिलों को तुम भी
नफ़रतो दूर हटो प्यार से गाएं होली

तफ़रक़ा दैर ओ हरम का है मिटाना हमको
ईद जिस तरह मनाई थी मनाएं होली

हिन्दू-मुस्लिम को भुला एक बनें हम और तुम
बन जा यूं फ़िरक़ा परस्तों की चिताएं होली

फूल जिस तरह से गुलशन को सजा देते हैं
हम गुलाल और अबीरों से सजाएं होली

गीत फूलों को हैं गाकर जो सुनाते शहनाज़
हम भी भौरों की तरह गा के सुनाएं होली

शहनाज़ हसन
गुरुग्राम (हरियाणा)

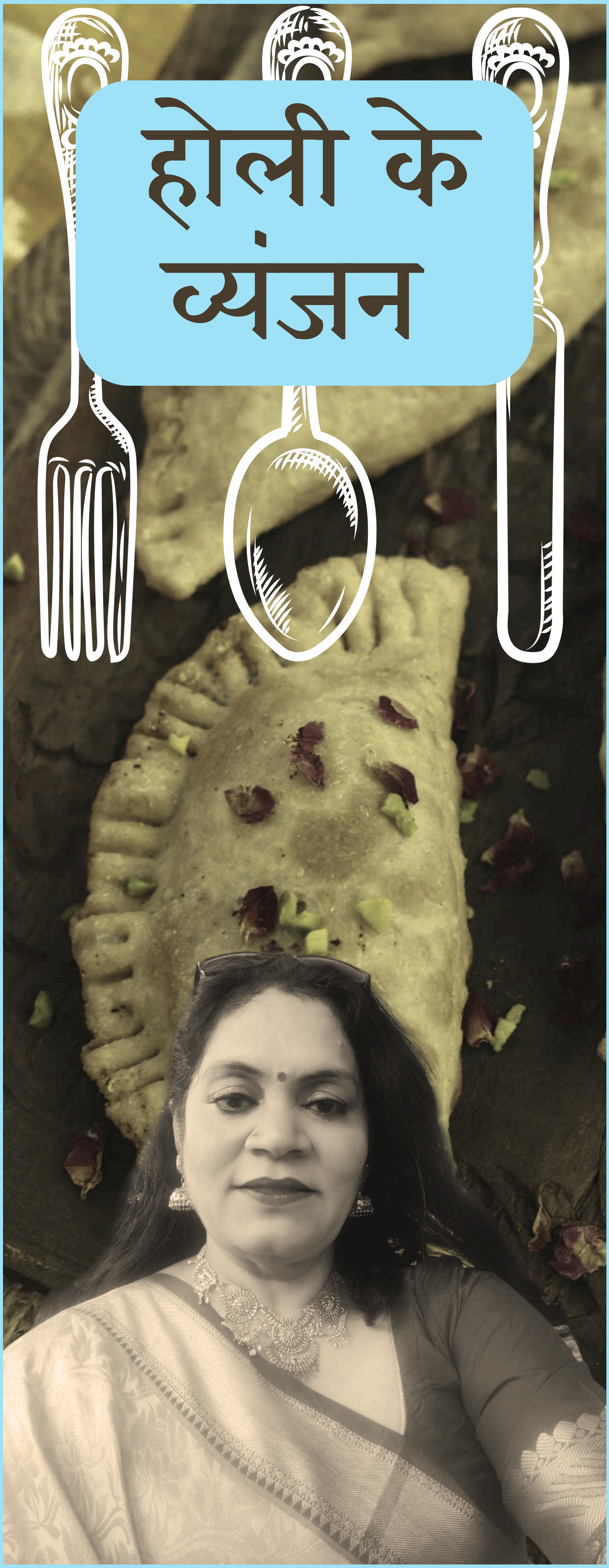

होली के व्यंजन

होली का पर्व हमारे प्रमुख पर्वों में से एक है, जिसमें रंगों के साथ उत्सव के साथ-साथ पारंपरिक व्यंजनों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। गुझिया और दही भल्ले होली के दो प्रमुख व्यंजन हैं, जिनकी बनाने की विधि निम्नलिखित है:

सामग्री

1. मैदा 2 कप
2. घी 2 कप
3. चीनी 1 कप
4. दूध 1/2 कप
5. इलायची पाउडर चम्मच
6. काजू, बादाम और पिस्ता- कप (बारीक कटे हुए)
7. नमक 1/4 चम्मच

रश्मि शर्मा
नॉएडा (उत्तरप्रदेश)

विधि

1. एक बड़े प्याले में मैदा, घी और नमक मिलाकर एक नरम आटा गूंथ लें।
2. आटे को 10-15 मिनट तक रख दें ताकि वह सेट हो जाए।
3. एक पैन में चीनी और दूध मिलाकर गरम करें। चीनी पूरी तरह से घुल जाने तक पकाएं।
4. एक अन्य पैन में घी गरम करें और इसमें काजू, बादाम और पिस्ता डालकर भून लें।
5. आटे को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट ले और प्रत्येक हिस्से को एक गोल आकार में बेल लें।
6. बेले हुए आटे के एक हिस्से पर चीनी का मिश्रण और भुने हुए ड्राई फ्रूट्स रखें और आटे को मोड़कर एक गुझिया का आकार दें।
7. गुझिया को गरम घी में तल लें और सुनहरा होने तक पकाएं।
8. गुझिया को गरम-गरम परोसे या ठंडा होने के बाद स्टोर करें।

दही भल्ले की सामग्री

1. उड़द दाल 1 कप
2. मैदा 1/2 कप
3. बेसन कप
4. नमक चम्मच
5. बेकिंग पाउडर चम्मच
6. दही- 1 कप
7. पानी आवश्यकतानुसार
8. तेल तलने के लिए
9. चाट मसाला, जीरा, काली मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर स्वादानुसार

विधि:

1. उड़द दाल को 4-5 घंटे तक भिगो दें और फिर उसे पीस लें।
2. एक बड़े प्याले में मैदा, बेसन, नमक और बेकिंग पाउडर मिलाएं।
3. पिसी हुई दाल को मैदा के मिश्रण में मिलाएं और आवश्यकतानुसार पानी डालकर एक नरम आटा गूंथ लें।
4. आटे को 10-15 मिनट तक रख दें ताकि वह सेट हो जाए।
5. आटे को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट लें और प्रत्येक हिस्से को एक गोल आकार में बेल लें।
6. एक कढ़ाई में तेल गरम करें और इसमें बेले हुए अल्ले डालकर सुनहरा होने तक तल लें।
7. भल्लों को गरम-गरम परोसे या ठंडा होने के बाद दही के साथ परोसें
8. दही में चाट मसाला, जीरा, काली मिर्च पाउडर और धनिया पाउडर मिलाकर भल्लों के साथ परोसें।

विश्व प्रसिद्ध इंदौर की रंगपंचमी (गेर)

रत्नेश त्रिपाठी
इंदौर (म.प्र.)

होली पर रंगों और गुलाल खेलने का सिलसिला चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से आरंभ होकर कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि तक चलता है। पंचमी तिथि को इस पर्व का समापन होता है। इस दिन को रंग पंचमी के नाम से जाना जाता है। रंग पंचमी का पर्व देश के कई राज्यों में धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन लोग राधा-कृष्ण को अबीर गुलाल अर्पित करते हैं। कुछ जगहों पर इस दिन जुलूस निकालने की भी परंपरा है। रंग पंचमी को देवताओं की होली भी कहा जाता है, इसलिए लोग इस दिन आसमान की ओर गुलाल फेंकते हैं. मान्यता है कि इस गुलाल से देवी देवता प्रसन्न होते हैं और जब वो गुलाल वापस नीचे आकर गिरता है, तो उससे पूरा वातावरण शुद्ध हो जाता है। हर तरफ सात्विकता फैल जाती है और सकारात्मकता का संचार होता है। रंग पंचमी का पर्व 19 मार्च 2025 को मनाया जायेगा। इस मौके पर जानते हैं कि देश के किस हिस्से में इसे कैसे मनाया जाता है।

देशभर में इंदौर की रंग पंचमी सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है, अपितु विश्वप्रसिद्द है। यहां होली वाले दिन से कहीं ज्यादा धूम रंग पंचमी के दिन देखने को मिलती है। इस दिन यहां एक जुलूस निकाला जाता है, जिसे गेर कहा जाता है। इस जुलूस में लाखों लोग शामिल होते हैं. कहा जाता है कि ये परंपरा होलकर वंश के समय से ही चली आ रही है। इसका उद्देश्य आपस में मिलजुलकर इस पर्व को मनाना और आपस में भाईचारा बढ़ाना है। कहा जाता है कि इंदौर में रंग पंचमी के पर्व के लिए लोग सालभर तक बेसब्री से इंतजार करते हैं। इस पर्व का आनंद उठाने के लिए दूर दूर से सैलानी इंदौर आते हैं। इस दिन यहां पिचकारी, वाटर टैंकर, मिसाइलों से करीब 100 से 200 फीट ऊंचाई तक हजारों किलो गुलाल और रंगों की बौछार होती है, जिससे सारा आसमान रंगों से सराबोर हो जाता है। लोग एक दूसरे को रंग लगाते हैं और इस पर्व को मनाते हैं। हर साल लाखों लोग इस पर्व का हिस्सा बनते हैं। रंग पंचमी मनाने के बाद लोग पूड़ी-श्रीखंड का भी मजा लेते हैं। इंदौर के अलग-अलग संगठन के लोग अपने ग्रुप लेकर शहर की सड़कों पर उतरते हैं। फिर किसी चार पहिया वाहन, टेंकर जैसी गाड़ी में रंग भरकर रखा जाता है। फिर बड़ी पिचकारियों की मदद से लोगों पर रंगों की फुहार उड़ाई जाती है। गानों की घूम में लोग जमकर नाचते हैं और रंग खेलते है। हर साल इस गेर में लाखों लोग शामिल होते हैं।

यहां की गेरों की खूबी यह होती है कि इसमें टैंकरों में रंग भरा होता है, जिसे मोटर पंपों यानी मिसाइल के जरिए भीड़ पर फेंका जाता है। जमीन से लेकर आसमान तक रंग ही रंग नजर आते हैं। गुलाल भी कुछ इसी तरह उड़ाया जाता है कि कई मंजिल ऊपर खड़े लोग भी इससे बच नहीं पाते हैं।बैंड-बाजों की धुन पर नाचते हुरियारों पर बड़े-बड़े टैंकरों से रंगीन पानी बरसाया जाता है। इस दौरान हुड़दंग भी बहुत होती है।

मप्र के इंदौर की गेर केवल प्रदेश और देश ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में भी प्रसिद्ध है। रंगपंचमी पर निकलने वाली गेर में लाखों लोग एक साथ होली मनाते हुए एक-दूसरे को रंग गुलाल लगाते हैं, फिर वह चाहे उनका परिचित हो या फिर कोई गैर ही क्यों न हो। इसलिए कहा जाता है कि इंदौर की गेर गैरों को भी अपना बना लेती है।

पॉज़िटिव ज़िन्दगी, रंग-भरी

रंगों से भरपूर इस जीवन में आपने कौन सा रंग ओढ़ रखा है ??

वसंत पंचमी,शिवरात्रि.. फिर होली पर ध्यान दीजिए।रंग ही रंग हैं चहुं ओर।वसंत के पीले नारंगी रंग से लेकर श्री शिव पर गुलाल का रंग और तत्पश्चात सारे संसार में फागुन के रंग। मैं जीवन को इन सारे रंगों में सराबोर देखती हूँ।

तनिक विचार कीजिए..!कि जीवन का प्रत्येक दिन नवीन है।हम प्रतिदिन नए भावों को जीते हैं,नए दिन से हमारा साक्षात्कार होता है, बीत चुके कल से कुछ नया भोजन और स्वाद हम स्वयं के लिए बनाते हैं। कल जो वस्त्र पहने थे उन्हें बदलकर नए स्वच्छ वस्त्र हम धारण करते हैं। नया रंग , नया स्वाद और नया दिन किन्तु भाव ??

क्या हम नित्य प्रतिदिन नवीन , सकारात्मक भाव से सूर्यदेव का स्वागत करते हैं? आपमें से बहुतों का उत्तर होगानहीं, परन्तु प्रतिदिन कैसे कोई भी नए भावों को जी सकता है ? जी हाँ..!ज़रूर जी सकता है। बस आपको अपने जीवन के छोटे-छोटे अभ्यास बदलने होंगे। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य जो समझने का है वो यह है कि , किसी का भी जीवन सदैव उत्कृष्ट या सम्पूर्ण नहीं होता है , तो फिरयह प्रश्न उठता है कि बहुत से लोग इतना प्रसन्न और जीवन से भरपूर कैसे होते हैं, यह भी शोचनीय विचार है।
उत्तर है , क्यूंकि उन्होंने अपने भावों को , लक्ष्यों को एवं समर्पण को अपनी अभिव्यक्तियों को साध लिया है। उन्होंने सीखा है , कब , कहाँ कितना बोलना है से अधिक आवश्यक , कहाँ चुप रहना है। किसी से अपेक्षाएं करने से अच्छा , स्वयं के अर्जन और विकास पर ध्यान देना है। स्वयं को समृद्ध करना है।

उन्होंने सीखा है समय का व्यवस्थित और अनुशासित उपयोग कर लेना। उन्होंने जान लिया है कि उनके चित्त की प्रसन्नता उनकी ही जिम्मेदारी है किसी अन्य की नहीं। उन्होंने जीवन में सकारात्मकता, प्रसन्नता, अच्छी संगत , अच्छी पुस्तकों और अच्छे संस्कारों, शिक्षा आदि का संचय किया है कदाचित उनका जीवन भर का यही अर्जन है। उनके पास बाँटने के लिए यही सारे रंग हैं , क्योंकि जो आपके पास होगा आप वही तो बाँटेंगे। इसलिए ऐसे लोगों के पास जाकर मन को शांति और उत्साह मिलता है।

तो मित्रों..! कुछ समय स्वयं को दीजिए और आत्मचिंतन कीजिए कि कहीं आपने अवसाद , ईर्ष्या , प्रतिशोध , अनावश्यक प्रतियोगिता, व्यर्थ की चिंता आदि के मलिन रंग तो इकट्ठे नहीं कर रखे हैं। यदि वास्तव में आपका संचय उज्ज्वल रंगों से भरपूर है तो आपका प्रत्येक दिन वसंत सा और प्रत्येक रात्रि शिवरात्रि सी अद्भुत और उत्सवमय है। और यदि आपने पीड़ा तथा भय का संचय किया है तो आप अपने मित्रों , परिवार आदि को वही वितरित कर रहे हैं। आज ही सावधान हो जाइए।आप अपना जीवन व्यर्थ कर रहे हैं।

जिम थॉर्प जो अमेरिका के एक एथलीट थे,उनकी अलग-अलग मोज़े और जूते पहने हुए तस्वीर इंटरनेट पर दिखाई देती है। 1912 के ओलंपिक खेलों में उनकी प्रतियोगिता के ठीक पहले किसी ने उनके जूते चुरा लिए। जिम ने बिना विचलित हुए , कूड़ेदान में सेदो जूते खोजे और वही पहन लिए। इनमें से एक जूता बड़ा वा ढीला था, और एक जूता छोटा था। बड़े जूते को नाप का बनाने के लिए उन्होंने उस पैर में दो मोटे मोज़े पहन लिए और उन दो असमान जूतों को पहन, जिम ने उस दिन दो स्वर्ण पदक जीते।

बस यही जीवन है।कभी भी किसी भी परिस्थिति में हार ना मानना जीवन है। स्वयं को पहले से अधिक बड़ी चुनौती दे देना जीवन है। मेरी शुभकामनाएं कि आप सभी जीवन के उन रंगों को भरपूर जी सकें, जो आपने स्फूर्ति और आनंद का संचार करते हों। जीवन अद्भुत है मित्रों इसके प्रत्येक रंग में सराबोर होकर ही इसके अद्भुत भावों के रहस्यों को जिया जा सकता है।

होली की शुभकामनाएं

निधि नित्या
जबलपुर(मध्यप्रदेश)

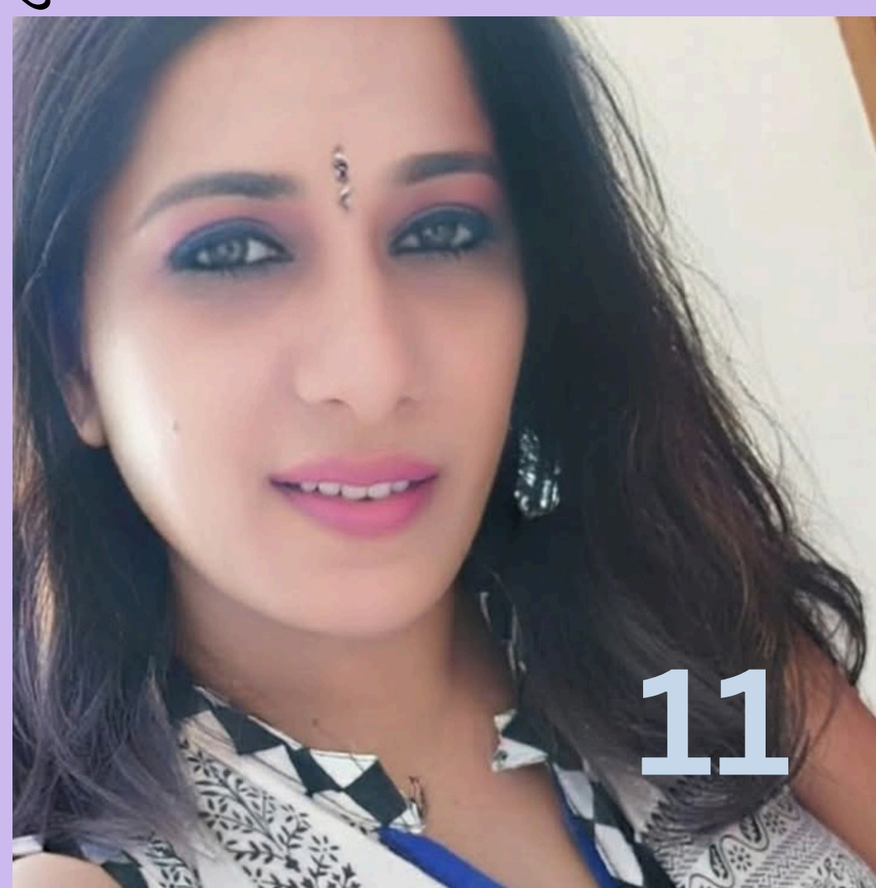

होली मिलन (लघुकथा)

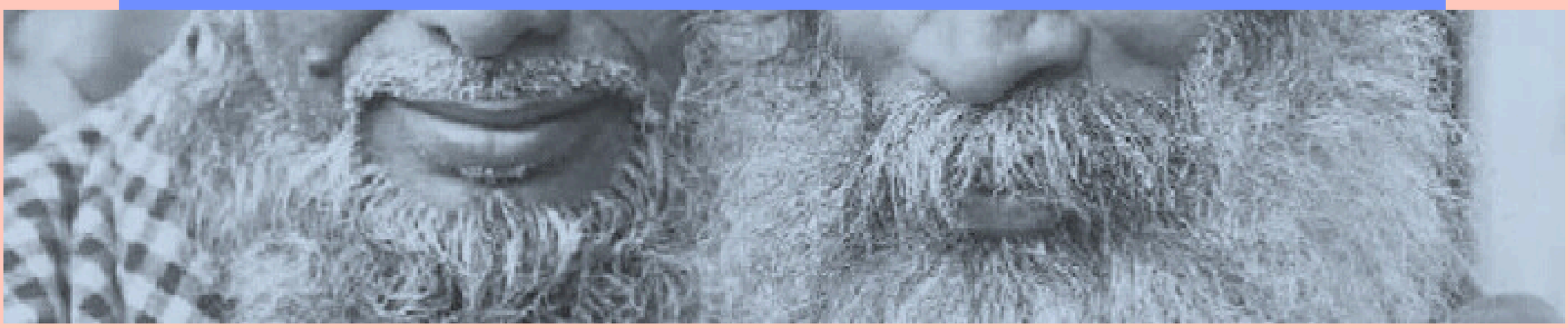

गली के एक छोर पर मंदिर और दूसरे छोर पर बनी मस्जिद में सुबह चार बजे से ही लाउडस्पीकर पर शोर मच जाता। अधिक से अधिक डेसीबल पर अजान या भजन बजा कर अपना प्रभुत्व बनाए रखने की कोशिश की जाती। मौलवी साहब और पंडितजी अपने समुदाय के लोगों को भड़काते रहते और कई बार हिंदू-मुसलमानों के बीच छोटी-मोटी झड़पें भी हो जाती।

एक संत ने मंदिर में प्रवचन दिया - "होली का उद्देश्य है आपसी बैर-भाव भूल कर प्यार के फूल खिलाना। इस बार होली पर जो सबसे बड़ा दुश्मन लगता है, उसे गले लगाओ। फिर देखना, प्रभु के दर्शन होते हैं या नहीं।"

पंडितजी को प्रभु दर्शन की लगन लगी थी, सोचते रहे मेरा सबसे बड़ा दुश्मन कौन है? होली के दिन हाथ में मिठाई का डिब्बा पकड़े मस्जिद में दाखिल हुए। अंदर पहुँच भौंचक्के से देखते रहे कि किस दिशा में जाएँ। तभी मौलवी की नज़र उन पर पड़ी और उनकी भौहें तन गईं- अकेला पंडित! मस्जिद में किस इरादे से आया होगा? मौलवी को देखते ही पंडितजी ने मुस्कुराकर उन्हें गले लगा, गुंझिया का डिब्बा खोलकर आगे कर दिया- "भाई! मिठाई खाओ... सारे भेदभाव भूल जाओ... ऊपर जो बैठा है, वही तुम्हारा है, वही हमारा है।"

एक पल के लिए मौलवी के मन में संदेह उत्पन्न हुआ कि कहीं गुंझिया में कुछ मिला हुआ तो नहीं? पर पंडित जी के सरल बोल और चेहरे के भाव देख आश्वस्त हो एक गुंझिया उठाकर पंडित जी के मुँह में डाल दी और दूसरी अपने मुँह में... दोनों न जाने कितनी देर तक एक दूसरे के गले लगे खड़े रहे।

श्रीमती नीरू मित्तल

पंचकुला

होली है भाई होली है

वासंती छटा से बौराया फागुन
बुला लाता है संग अपने
होली के रंग-गुलाल का मौसम
इसे देख पलाश भी दहकने लगा और
आम्र मंजरियों से कोयल कूकने लगी,
टपकते महुआ की मादकता सिर चढ़ने
लगी
तभी नगाड़ों ने किया ये ऐलान-
होली है भाई-होली है
बुरा ना मानो - होली है।

छिपने-छिपाने का खेला मचा
गोपियाँ ढूँढने लगी कृष्ण को और
कृष्ण ढूँढने लगे अपनी राधा रानी को,
सजने लगी पिचकारियाँ
जमने लगी हुलियारों की बैठकें
गीत होली के गूँजने लगे
रंग से सराबोर बृज धाम
श्याम रंग की चाहत से
मुखौटे में ढूँढने लगी उस हरजाई को।

वहीं कोई घूँघट ये चाहती है कि-
कोई उसे रंग ना लगाए लेकिन
वो ये भी चाहतीं हैं कि-
कोई ऐसा रंग लगे जो ना उतरे;
कहीं रंगों में छिपी है- लाज और हया
तो कहीं खुली है-मन की गाँठें
गुलाल का टीका माथे पे सोहे और
गुझिया-पेड़े संग मीठी वाणी से झरे-
खुश रहिए,कल्याण हो... ।

फागुन की मस्ती को पसंद नहीं होता-
रंग में भंग मिलाना;
नशा,जुआ,गुब्बारा, पेंट और
पहचान कौन के मुखौटे इसे डराते हैं ,
फागुन के संग दौड़ी आती है-
बुराई के नाश का मंत्र,
भाईचारे का संदेश और
इन्हीं सब मस्तियों के बीच
आखिर कोई क्यों मानेगा बुरा
इसलिए ही तो चिल्ला पड़े हैं
लोग-लुगाई, बच्चे-बूढ़े
बुरा ना मानो - होली है
होली है भाई-होली है।

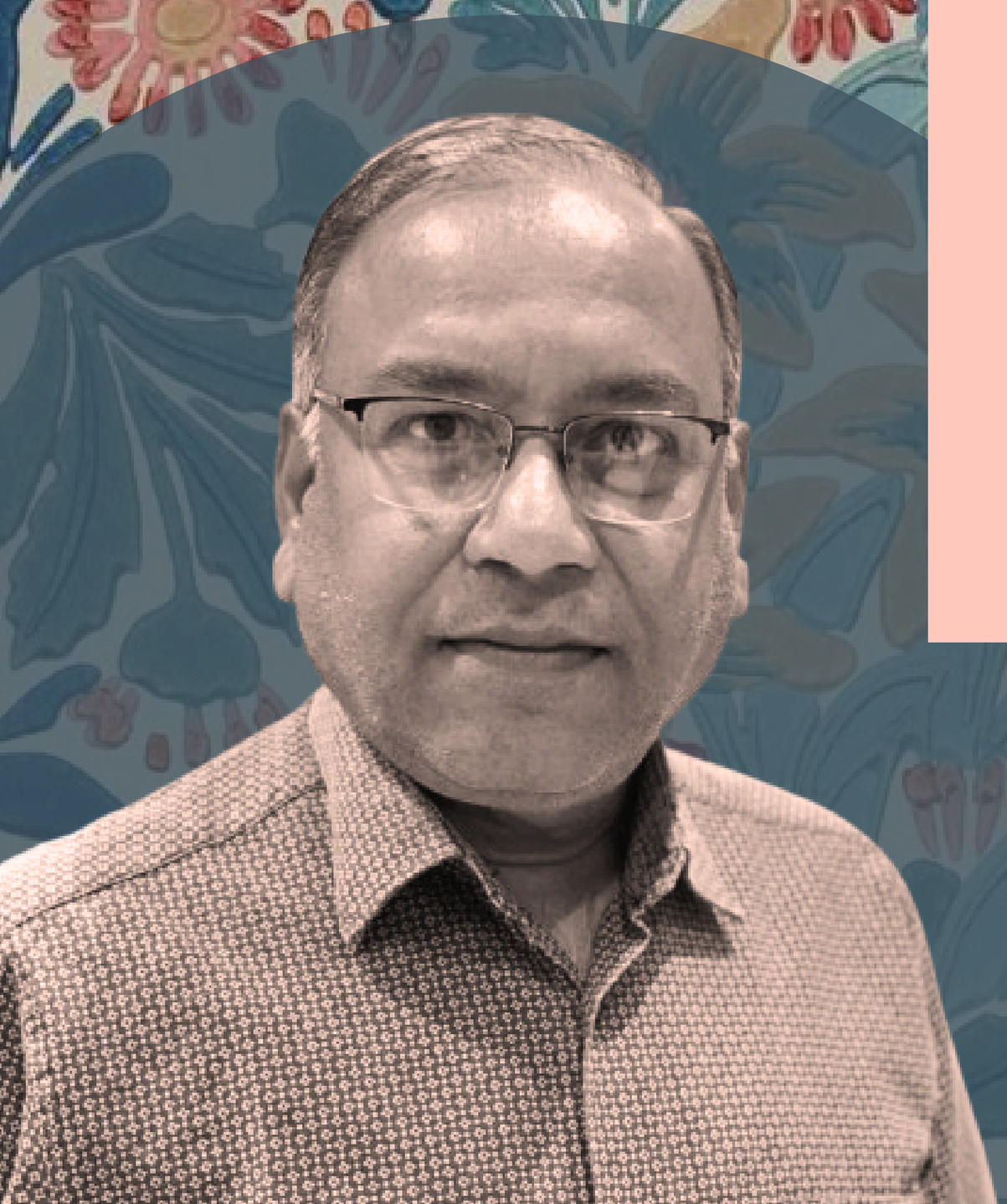

रमेश कुमार सोनी
रायपुर(छत्तीसगढ़)

बैकुनपुर की होली

बैकुनपुर की होली का जब भी किस्सा याद आता है
क्या बतलाऊँ मेरे मन को भीतर क्या छू जाता है

आओ बतलाऊँ मैं किस्सा बैकुनपुर की होली का
रंगों में परसा की रंगत, दामन भरी ठिठोली का

गाड़ दिया सम्मत जब से तब नींद कहाँ फिर आती थी
सपनों में भी सबसे ऊँची अपनी होली छाती थी

बाँस-बेशरमी, आम-झुरन्ठी, जो भी मिलता कट जाता
हाथ लगे जो खटिया-टट्टर सब होली में पट जाता

दलपत बाबू चुरा रहा है किसी डहर टेबल कुरसी
उसकी खटिया खुट्टनपारा में जाकर होली भरती

कल्लू भैया लकड़ी चोरी में गिर गए हैं हत्ते से
टूटी हड्डी, हैं खटिया पर पसरे पूरे हफ्ते से

घूम रहे हैं रेंजर साहब लकड़ी लौटा दो बाबू
होली की लकड़ी भी कोई वापस लेता है चाचू?

होली के पन्द्रह दिन पहले लड़के मांग रहे चन्दा
रोक रहें हैं साइकिल-ट्रैक्टर मचा हुआ है बुढ़पंगा

नाका पर है सभी निखट्टू चन्दा माँगें पकड़-पकड़
लो, टीआई खुँटिया पहुँचे, मची जोर की हबड़-तबड़

यह-जा वह-जा सभी मछिंदर, भागे खेत खेतौली में
पकड़ जो आए, जबर सोंटाए, सन अस्सी की होली में।

होली की बिहान को बच्चे, जाते मचल तरंगों में
कुछ पा जाते पिचकारी तो, कुछ यूँ ही हुड़दंगों में

अजब-गरीबी, गजब-गरीबी, रंग अबीर तलक मुश्किल
लोगों की दौलत में शामिल, लेकिन मन-मन भर के दिल

कीट, जले मोबिल से फिर, होली का रंग होता काला
बैकुनपुर की होली में यह पक्का था गड़बड़झाला

खूब फँसे हैं डाक्टर डैंग बड़ाम भाई के चंगुल में
ऊपर से नीचे तक डॉक्टर सने हुए हैं मोबिल में

बिल्लू भैया शेर रहे पर आज घुसे हैं जा बिल में
छेदी दादा ताल ठोंकते, डरते सब उनसे दिल में

गैरेज है भोपाल नाम का, ले आओ तुम भी मोबिल
पर मलने से पहले देखो, बन्दे का कितना है दिल

मोबिल से मंजन करवाना, कच्छे तक में भर दो कीट
छूटेगा जैसे ही बंदा, देगा सबको दम से पीट

आते-जाते लोग सहज हैं, जितना रंगना है रंग लें
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-इसाई, सब मिलकर होली खेलें

वो देखो आते हैं खुटहनपारा से मौसा रहमान
झक्क सफेद रखा है कुरता, जी भर डालो रंग मितान

बैठे हैं मौसा जी प्यारे, दबी पनामा की सिगरेट
डालो ना रे रंग बेटा तुम, मौसा को कब होता लेट

कहते हैं अम्मा से मौसा, तुम भी तो रंग लो बिट्टी
मौसा हैं अम्मा के जीजा, बहिन-बहिन की इक मिट्टी

उधर तिवारी चाचा निकले, पहन कोट फिर से काला
कोट शाम तक काला ही है, जिसने जितना रंग डाला

रेनकोट भी पहने हैं कुछ, क्यों जी खेल रहे होली
छेड़ रहे हैं सब हंस-हंस कर, बचपन के वह हमजोली

परसा की माला हैं पहने, दुर्गा पण्डित हैं अगुआ
मुल्लू मामा संग हैं उनके, मटक-मटक गाएँ फगुआ

हुई दोपहर अब अम्मा की टोली निकले होली को
चाची, मामी, वर्मा दादी सारे चले ठिठोली को

एक से सोलह नम्बर क्वार्टर, पूरा भट्ठी पारा है
हर घर में झर-झर झरता फिर रंगों का फौवारा है

हुई शाम अब गुझिया-पेड़ा, भांग चढ़े हैं सर ऊपर
फगुआ गाओ सब चलके अब, बोल रहे हैं रम्मू सर

रम्मू चाचा की परछी में ढोलक गूँजे ढम्मक-ढम्म
ठाकुर भैय्यालाल मगन हैं हाथ पटक के गम्मक-गम्म

टेर रहे हैं शिवधर चाचा -'साँझै पहर के सुगना हो'
घुड़क रहे हैं बाकी जन को -'गाथस का तूँ ठगना हो'

रम्मू चाचा की बैठक में, फगुआ का इतिहास बसा
दशकों से परछी की कंडी में फगुआ है सिझा हुआ

अब न रहे वह लोग कहूँ क्या, रही न बाकी टोली ही
फिर भी मुझको भाती है बस बैकुनपुर की होली ही

याद करूँ वह दिन तो बरबस, दिल मेरा भर जाता है
बैकुनपुर की होली का किस्सा अक्सर याद आता है।

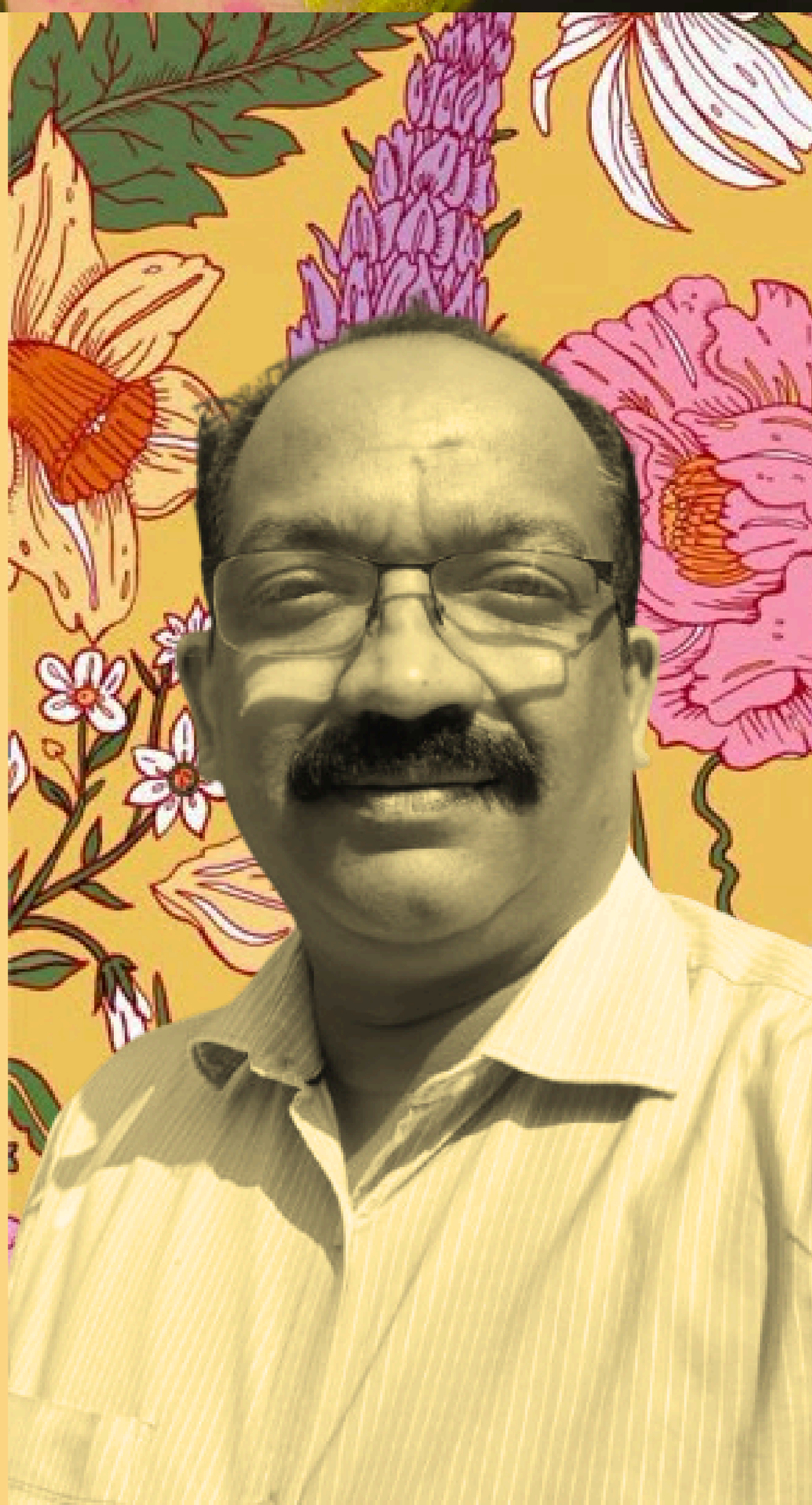

पद्मनाभ गौतम
बैकुण्ठपुर (कोरिया)

होली में भंग
(हास्य कविता)

सुबह सबेरे आँख खुली तो
श्रीमती जी से फरमाईश कर डाली
प्रिये! जल्द लेकर आओ चाय की गरमागरम प्याली
वे भी होली के रँग में रंगी थी
कुछ ज्यादा ही होली में थी मतवाली
भोरे भोरे ही चाय में भंग की गोली मिला डाली |
बस फिर क्या था
सुबह सुबह ही होली का सरुर छा गया
लाल गुलाबी नीला पीला आ गया |
क्या बताऊँ यारों
कवितायेँ ऐसे सृजित होने लगी
बिन मात्रा बिन छंद के
गर्दभ राग में बहकने लगी।

स्वर एवं शब्दों का अतिशय मिलन
जब भ्रमित गुंजार करने लगा
मस्तिष्क चक्करघिन्नी खा खा
नयी नयी कल्पनाओं का संचार करने लगा |
एक के दो , दो के चार तो थे ही
बीस कचौरियां और दस लड्डू कर उदरस्थ
कल्पनाओं की उड़ान में होने लगा मस्त
चेतना सातवें आसमान पर पहुँच
समाधिस्थ हो रही थी
अध्यात्म का अद्वैत सिद्धांत

अब परिपक्वता से लंबित था
शिव जी की लम्बी समाधि का सूत्र
भंग धतूरे की तरंग का व्यापक प्रभाव
अब सरलता से परिलक्षित था |
रंगों की होली थी कि होली के रँग थे
देख अनुभूति प्रीत जाल की हम दंग थे
लाल काले हरे नीले मुखौटे
मुखौटों में छिपे मुखौटे
क्या असली था क्या नकली
हम गफलत में गाफिल थे |
बस इतना मुख से निकल रहा था
अंततः सब सुख स्फुरित हो रहा था
होलिका का दहन तो क्या हुआ
अपना दोहन हो रहा था ||

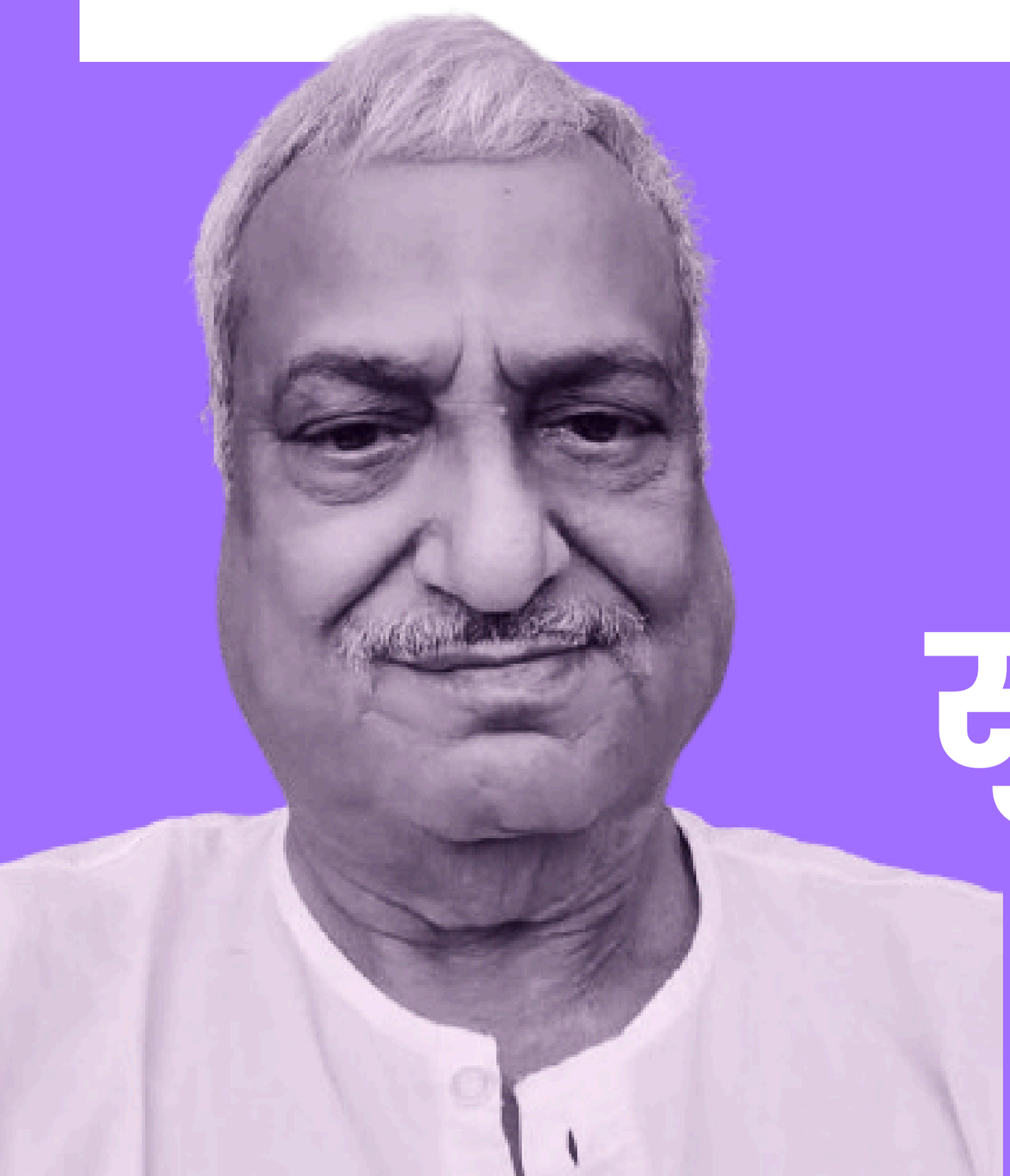

सुरेश चौधरी
(कोलकाता)

जिसने रिश्तों को प्रगाढ़ होने की नई भाषा दी है
यह अभिलाषा और ये मौलिक अभिव्यक्ति
जिसने परिभाषित किया है हमें और हमारी
विचारधारा को भी
को भी
और सुनो
होली मुबारक
तमाम रंगों का जादू देह पर बिखर गया और
अप्रत्यक्ष रूप से प्रेम सजीव हो गया
एक बार फिर
अपने में
अपनों में।

सुनो
मेरे मन की पुकार
वह कहता है
कि मेरे सभी रंग तुम्हारे लिए
केवल तुम्हारे लिए
लाल,पीला,नीला और हरा
वैसे तो तुम पर सभी रंग जमते है
पर कत्थई रंग तो विशेष फबता है तुम पर
और बताऊं
तुम्हारे सभी रंगों का अक्स मुझ पर दिखता है
जैसे किसी ने फोटोकॉपी सा ट्रीटमेंट दे दिया हो
सुन कर तुम मुस्करा दी
जैसे वह मेरी प्रतीक्षा में की गई प्रतिक्रिया हो
तुम मेरी प्रकृति
और मानो मौन स्वीकृति हो
हमारे प्रेम की
सारे रंग अपनी आत्मीयता से खिलखिला उठे
यही ताज़गी है प्रेम की मोहब्बत की
और होली की मिठास की

लालित्य ललित
(दिल्ली)

होली गीत

फागुनी सिंगार है
उत्सवी उजियार है

बसंत का निष्कर्ष है, रम्यता है हर्ष है
चंग थाप लहरा रही, फगुआ का उत्कर्ष है
चमन में चमकार है
उत्सवी उजियार है

मस्तों की छावनी है, रंग छटा सावनी है
रसिया हैं कामिनी है, घूमर, झूमर लावणी है
बहार में बहार है
उत्सवी उजियार है

रंग चमके कपोल पर, थाप नगाड़े, ढोल पर
जो कुछ कहें होली में, हृदय तुला पर तोल कर
स्नेह की दरकार है
उत्सवी उजियार है

बसंती पवन के संग, रंग रंगीन उड़ रहे
होली की टोलियों में, अनमने चित्त जुड़ रहे
चली प्रेम फुहार है
उत्सवी उजियार है

बिछड़े सभी गले मिले, गली में चौबारों में
अहं छोड़ हँसते सभी, रंग की बौछारों में
छाया इक खुमार है
उत्सवी उजियार है

भंग में मिला भूल से, इक चटक गुलाली रंग
मस्ती में सब पी गये, यह बहुरंगी सी भंग,
उड़ान पर सवार है
उत्सवी उजियार है

ओमप्रकाश नौटियाल
वड़ोदरा(गुजरात)

कृषक की होली

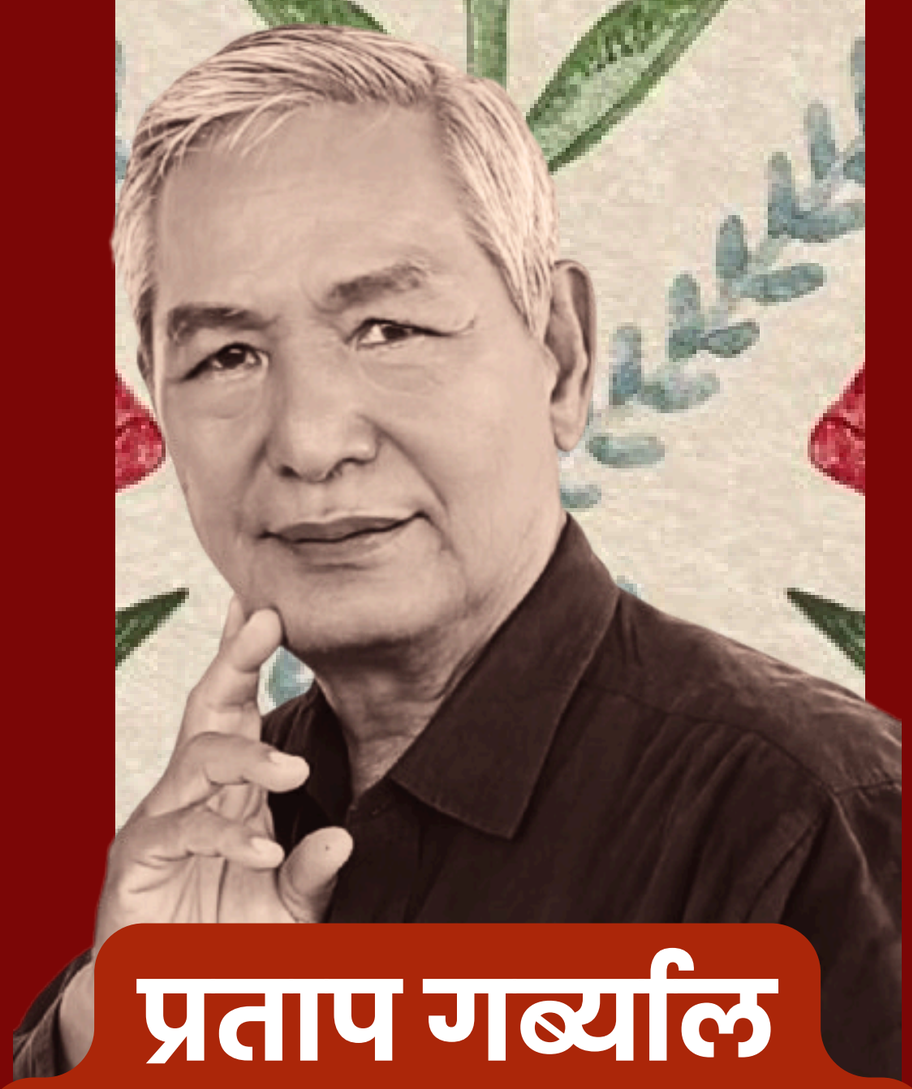

प्रताप गब्र्याल
हल्द्वानी(उत्तराखंड)

गहन, हरित
गगन चुम्बी
चीड, वमन,भोज पत्री
वृक्षों के पहरे में
घिरे, सिमटे
सीढ़ीनुमा खेतों में
निमग्न भाव से जुते
झुप्पुओं के गले में
झूलते
उनके
अलमस्त चाल से
डोलती
घंटियों के
निनाद की अनुगूँज
छेड़ गया इक राग
शान्त वातावरण में ...
और
घोल गया मिश्री सा
मीठा संगीत
कानों में ....
अभी अभी
चाँदी सी श्वेत धरती के
सीने को चीरते
हल के फल से
छिटके माटी के कणों ने
अभिषेक किया है
मेरा .....
हाँ,
मैंने भी खेल ली होली,
बैशाख में
अपनी माटी के
चमकीले, सुवासित
श्वेत रज कणों से ....

हाँ,
मैंने भी खेल ली होली,
बैशाख में
अपनी माटी के
चमकीले, सुवासित
श्वेत रज कणों से ....

सन गए हैं
ये अनमोल कण मेरे
पैरों में,
हाथों में,
उँगलियों के पोरों में
यहाँ तक कि
मेरे गालों में,
बालों में
और
भिगो गया मुझे
मेरे अन्तः तक ...
घुल गया
मेरे रोम रोम में
पुलकित कर
मन को.....

हाँ,मैंने भी खेल ली होली ...
इस दुर्लभ होली के
रंग के समक्ष,
फीके हैं
अबीर और गुलाल के
सातों रंग .....
हाँ,मैंने भी खेल ली होली ...
वमन: देवदार नुमा हिमालयी
वृक्ष; झुप्पु: याक और गाय के
संसर्ग से उत्पन्न जानवर।

अमरपुर की अनोखी होली

कोरिया जिला मुख्यालय बैकुंठपुर से क़रीब 12 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम पंचायत अमरपुर में ग्रामीण एक सप्ताह पहले रंगों का त्योहार होली पर्व धूमधाम से मनाकर पूर्वजों की परंपरा का निर्वहन करते हैं। होली पर्व से पहले गाँव में बैठक होती है और एक सप्ताह पहले होलिका दहन करते हैं।फिर अगले दिन विधि-विधान से देवल्ला में पूजा-अर्चना कर एक दूसरे को रंग-गुलाल और अबीर लगाकर होली की शुभकामनाएँ देते हैं। गांव के बुजुर्ग व युवा वर्ग फाग गीतों पर जमकर झूमते हैं। अमरपुर में होली खेलने और देखने के लिए आसपास के ग्रामीण पहुँचते हैं।ये परंपरा आज़ादी के पूर्व से आज तक क़ायम है।

गांव में किसी प्रकार की अनहोनी को टालने हर साल एक सप्ताह पहले होली पर्व मनाया जाता है। अमरपुर में एक सप्ताह पहले होली खेलने की परंपरा हैं, जो कोरिया जिला सहित आसपास में बहुत प्रसिद्ध है। ग्रामीणों के अनुसार त्योहार एक सप्ताह पहले मनाने से गाँव के किसी परिवार में अनहोनी व किसी प्रकार की अप्रिय घटना नहीं होती है। गाँव के लोगों को अनहोनी से बचाने के लिए वर्षों से एक सप्ताह पहले होली खेली जाती है। वहीं पूर्वजों ने सालों पहले होली को पहले मनाने का रिवाज़ बनाया है।

इस कारण ग्रामीण अपने बुजुर्गों के बनाए नियम का पालन कर होली पर्व मनाते हैं। अमरपुर में वर्षों पहले बुजुर्गों की परंपरा को क़ायम रखा गया है। ग्रामीण पारंपरिक मृदंग ढोलक, मंजीरे की थाप के साथ होली का त्योहार मनाते हैं। वहीं युवा व बच्चे आधुनिक डीजे व बाजे-गाजे के साथ होली खेलते हैं।

ग्रामीणों का कहना है कि गांव में वर्षों से होली, पोला, हरेली व दिवाली का त्योहार यहां एक सप्ताह पहले मनाया जाता है। इससे गांव में किसी प्रकार की अनहोनी व अप्रिय घटना नहीं होती।

वर्षों पहले होली त्योहार के दिन एक ग्रामीण के घर में अप्रिय घटना हुई थी। इस दौरान एक पुरोहित ने एक सप्ताह पहले होली त्योहार मनाने की सलाह दी थी और तब से लेकर आज तक यह परंपरा क़ायम है।

सुनील कुमार

चिरिमिरी (छ. ग.)

मन से लड़ (नवगीत)

चलता जा !
ओ चलता जा रे !!
आगे बढ़ आ
आगे जा बढ़
रुके नहीं,
प्रतिवाद से न अड़,
रूढ़ि त्याग,
अपवाद से न लड़।

गुनता जा !
ओ गुनता जा रे !!
कच्ची मिट्टी
माफ़िक मन गढ़
मन से लड़
मरजाद से न लड़।
रूढ़ि त्याग,
अपवाद से न लड़।

जब से आने लगी मशीनें
कामगरों से रोजी छीनें
टूट गये हैं- सपने झीनें
कूड़े से अब क्या-क्या बीनें ?

ढलता जा !
ओ ढलता जा रे !!
समय देख कर
तू भी जा कढ़
तन से लड़
ईज़ाद से न लड़..
रूढ़ि त्याग,
अपवाद से न लड़।

छोड़ दिया है रोना–धोना
धातु एक, क्या पीतल-सोना
धरती का हर कोना-कोना
चाह रहा- बस सुंदर होना

सुनता जा !
ओ सुनता जा रे !!
लंबी-लंबी
इतनी न चढ़
जन से लड़
जननाद से न लड़...
रूढ़ि त्याग,
अपवाद से न लड़।

अशोक शर्मा (जयपुर)

होली का त्योहार: महत्व एवं प्रभाव

भारत त्यौहारों का देश है। सच कहा जाये,तो त्यौहारों के बिना जीवन नीरस है। मुझे तो लगता है कि होली ही एक ऐसा सबसे ज़्यादा लोकप्रिय त्यौहार हम पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। पूरे परिवार को एक दूसरे से प्रेम संबंध में बांधता है एवं सबके प्रति प्यार व सम्मान का भाव रखने की प्रेरणा देता है। ज़्यादातर इस त्यौहार को बच्चे बड़े धूमधाम से मनाते हैं। सप्ताह भर पहले से ही होली का माहौल आपको नज़र आने लगता है। होली ऐसा त्यौहार है जिसका प्रभाव होली शुरू होने से लेकर होली खत्म होने तक हमारे दिल और शरीर दोनो को किसी न किसी रंग में रंग जाता है। कुछ नेचुरल रंग जैसे पालक, हल्दी, टेसू और चंदन से बने रंग भी अपनी ख़ुशबू बिखेर जाते हैं।

होली पर घरों में गुझिया, नमकीन, खट्टा पानी पकौड़े, दही भल्ले बनाने का प्रचलन है। इस पर्व पर गरीब- अमीर, छोटे -बड़े ,पास -पड़ोस,रिश्तेदार किसी को भी बिना किसी भेदभाव के रंग लगाते हैं जिससे मन में अपने आप प्रेम और अपनेपन की भावना आ जाती है।

होली रंगों का त्यौहार है रंगो बिना होली सूनी है ।होली के रंगों को देखकर एकबार तो मन भी रंगीन सा हो जाता है। कहीं कहीं तो ढोल भी बजते हैं आज भी अभिताभ बच्चन का यह मशहूर गाना गुनगुनाया जाता है , रंग बरसे भीगे चुनर वाली".... यह होली फ़िल्मी गीत, पूरे देश भर में बहुतायत से लोकप्रिय है ।ऐसा लगता है कि इस गाने ने अमिट छाप हम सब पर छोड़ी है ।सारा दिन रंगो की बौछार होती है लेकिन मन की होली अपने आप रंगीन हो जाता है।
हमारे देशवासी अच्छी तरह जानते हैं कि होली के त्यौहार का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव हम सब पर पड़ता है।

होलिका दहन पर जब हम होली जलाते हैं तो हवा की गुणवत्ता खराब हो जाती है। होली की एक रात पहले नियमानुसार होलिका दहन होता है जिसके कारण पूरे इलाके. में धुंआ फ़ैल जाता है, फलतः वायु प्रदूषण और श्वसन संबंधी रोग हो सकते हैं।

रंगों के त्यौहार में रंगों में रसायनिक रूप से तैयार रंगों की मिलावट शुरू कर दी है जिससे त्वचा संबंधित रोग होने निश्चित हैं। जल प्रदूषण की भी समस्या अब हावी हो गई है। एक तरफ तो हम कहते हैं जल पर ही जीवन है, लेकिन लोग पानी की बाल्टियां रासायनिक रंग हम एक-दूसरों के शरीर के ऊपर डालते हैं इसीलिए होली के दिन पूरे देश में जल की कमी हो जाती है। तैयार, गीले एवं ज़हरीले रंग हमारे लिए हानिकारक हैं। इन रंगों में लेड आक्साइड कापर सल्फेट एल्युमिनियम ब्रोमाइड मर्करी सल्फाइड आदि हो सकते हैं ।गीला रंग गलती से किसी के मुंह में लग जाता है और गलती से गले में ही इसे लेने लगते हैं, जो काफ़ी ज़हरीला होता है।

अंततः

हमें होली को रंगों तक ही सीमित रखनी चाहिए, रासायनिक रंगों और ज़हरीले रसायनों से दूरी बरतनी चाहिए।कोई भी विशेष त्यौहार हमें दिल खोल कर मनाना चाहिए।स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरत कर एवं शारीरिक संतुलन बनाये रखना चाहिए। होली हमारा विशेष एवं महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है। इसी पुरातन परम्परा मानकर हर दिन होली के त्यौहार के लिए इंतज़ार करें।

होली की शुभकामनाएँ, दोस्तों!

श्रीमती राजेश्वरी मंडोरा

(दिल्ली)

लागा होली का रंग छुड़ाऊं कैसे? (हास्य व्यंग्य)

होली का त्यौहार आया और संग में लाया एक अनूठा आयोजन। जी हाँ, हड्डी एवं जोड़ रोग विभाग भी अपनी खासी तैयारी में जुट गया है। इस बार होली में रंग की जगह प्लास्टर का चूना लगाने की सोच रहा है, क्योंकि भला होली पर हड्डी टूटने का डर किसे सताता नहीं है?

वैसे, आपको बता दूँ, होली अब पहले जैसी नहीं रही। रंग भी वो पक्के नहीं रहे जिन्हें छुड़ाना भी किसी महाकाव्य का एक अलग अध्याय बन सकता था। जिस प्रकार से होली के रंग छुड़ाने के लिए विभिन्न नुस्खे, टोटके आपके घर में, पड़ोस में और फोन पर आपके रिश्तेदार सुझाते हैं, उन्हें सुनकर डर लगता है—रंग लगवाएँ या नहीं!

इस रंग छुड़ाने की प्रक्रिया में कपड़े धोने के साबुन, विम बार, सर्फ एक्सेल, पत्थर का टुकड़ा, चॉक का टुकड़ा और न जाने क्या-क्या सामग्री इस्तेमाल होती है। जितना पानी रंग लगाने में नहीं बहता, उससे दस गुना इन रंगों को छुड़ाने में बहा दिया जाता है, फिर भी होली में की गई मस्ती के अवशेष आपके कान के पीछे जमे धब्बों और आपकी उँगलियों के नाखूनों पर अपनी चिर स्मृति छोड़ ही जाते हैं।

यूँ तो आजकल रंग आप पर चढ़े नहीं, इसके भी कई उपाय पहले से ही कर लिए जाते हैं—जैसे घर से पहले ही इतना रंग लगाकर निकलो कि कोई कोना बचा ही न रहे जहाँ दूसरा रंग चढ़ सके। हाथ-पैरों में तेल और क्रीम की जमकर परत चढ़ाना भी एक खास नुस्खा है। कई लोग तो इसके लिए अजीब-अजीब बहाने बनाते हैं, यहाँ तक कि रंगों से एलर्जी का डॉक्टरी प्रमाण पत्र तक अपनी जेब में रखते हैं!

आजकल उन भाभियों को, जिन पर रंग लगाने के लिए पूरा शहर ही उमड़ पड़ता है, खास निगरानी में रखा जाता है। उनके घरवाले पहले ही सख्त हिदायत दे देते हैं—"कुंडी नहीं खोलना!" खुद भाई पूरे शहर में दूसरों की बीवियों को रंग लगाने में व्यस्त रहेगा, लेकिन अपने घर में खुद को कुंडी के पीछे ऐसे बंद कर लेगा जैसे अब दीवाली पर ही बाहर निकलेगा। लेकिन ये भाभियाँ भी ना! इनकी आदत में अपने आपको ढालने की गज़ब कला होती है। जैसे ही पतिदेव घर से निकलते हैं, ये तुरंत कुंडी खोलकर होली के मैदान में उतर जाती हैं।

रंग-मस्ती में सराबोर ये भाभियाँ शाम होते-होते अपने पतिदेव के आने से पहले ही रंग छुड़ा लेती हैं। लेकिन सच्चाई तब सामने आती है जब देवर जी मिठाई का डिब्बा लेकर घर पहुँचते हैं और जबरदस्ती पीड़ित पति के मुँह में मिठाई ठूँसते हुए अपनी "विजय श्री" की घोषणा कर देते हैं। धन्यवाद की मुद्रा में भाभी जी को सम्मान देते हुए कहते हैं—"इस बार भी आपने हमारी होली की इज़्ज़त रख ली!"

होली में मैं भी खूब खेलता हूँ, और इसका प्रमाण महीनों तक मेरे हाथों पर रहता है, जो मेरे द्वारा लगाए गए प्लास्टर में भी होली के दास्तान की छाप छोड़ जाता है। और तो और, मेरी होली की कहानी मेरी शर्ट और बनियान की कॉलर पर भी साफ नज़र आती है। श्रीमती जी ने पहले ही आगाह कर दिया है—"महीने भर तक एक ही जोड़ी शर्ट-बनियान ताननी पड़ेगी, वरना पूरा वार्डरोब अपनी होली की दास्तान से प्रिंट कर दोगे!"

ओपीडी में महीने भर मरीजों के ताने भी सुनने को मिलेंगे

"अरे डॉक्टर साहब, आप भी होली खेलते हो?"

जैसे कि होली डॉक्टर के लिए बनाई ही नहीं गई हो! मुझे एक अपराधबोध सा महसूस होता है, मीरा की तरह— "लागा चुनरी में दाग, छुपाऊँ कैसे?"

मैं बहुत कोशिश करता हूँ, लेकिन मेरे हाथ, जो कि प्रिस्क्रिप्शन लिख रहे होते हैं, एक सबूत के तौर पर अपनी अलग ही कहानी कहते नज़र आते हैं।

होली सिर्फ हम ही नहीं खेलते, हमारा तो पूरा घर ही होली खेलता है! लाख कोशिशों के बावजूद आँगन में खेली गई पानी, रंग और गुलाल की होली अपने रंगों की छाप पैरों के ज़रिए अंदर घर की फर्श को ऐसे रंगती है, जैसे नई नवेली दुल्हन के गृह प्रवेश के दौरान पैरों के छापे लगाए जाते हैं। रसोई में बनीं गुजिया, मिठाइयाँ और पापड़ भी मेरे रंग के कुछ हिस्से को आत्मसात कर, इस होली के रंग में डूब जाना चाहते हैं।

रंग सिर्फ लगाए ही नहीं जाते, रंग पिए भी जाते हैं— पानी और ठंडाई में घोलकर!

होली का रंग सिर पर ही नहीं चढ़ता, चश्मे पर भी चढ़कर बोलता है।

अब होली आन माथे पर आ जाए, तब भी पता नहीं लगता कि होली आ गई! पर होली तो आ ही गई है... व्हाट्सएप पर संदेशों की बौछार शुरू हो गई है... लेकिन यह कैसी होली आ गई?

पुराने ज़माने में होली का नाम सुनते ही गली-मोहल्लों में रौनक बिछ जाती थी। क्या बच्चे, क्या बूढ़े, क्या जवान— सभी एक ही रंग में रंग जाते थे। कहावत भी है न— "होली पर तो जेठ भी देवर सा लगने लगता है!"

होली के रंग के साथ मृदंग की थाप और रसिया-खयालों की अनवरत गूँज माहौल को फाल्गुनी बौछार में सराबोर कर देती थी।

और आज की होली? "थोथा चना, बाजे घना!" रंग फीके पड़ गए... पहली बात तो रंग चढ़ते ही नहीं, और चढ़ भी जाएँ तो शाम तक टिकते नहीं— बिल्कुल आज के रिश्तों की तरह! होली को भी लग रहा है कि 'दो मिनट वाले नूडल संस्कृति' ने उसे बदल दिया!

पहले की होली में गुलाल और रंग के साथ आत्मीयता का रंग घुला करता था। आज? 'स्किन-फ्रेंडली' रंग बिकते हैं, जैसे हमारी खाल अलग से ऊपर वाले ने बनाई हो!

गुजिया, पापड़ी और ठंडाई की जगह अब "कुछ मीठा हो जाए" के नाम पर चॉकलेट और केक ने ले ली है।

पिचकारी अब सिर्फ किताबों और बच्चों के इतिहास के पन्नों में सिमटकर रह गई है।

बच्चों की गुल्लकें तो जैसे विलुप्त प्रजाति हो गईं! कहाँ गए वो पुराने संदूक से निकलते कपड़े, जो होली के लिए 'रिज़र्व' रहते थे ? कहाँ गई वो होली की बालुरिया?

अब सब बीते ज़माने की बातें हो गई हैं।

अब होली खेली जाती है मोबाइल और वीडियो गेम्स में। बच्चे रंगों की जगह स्क्रीन पर उँगलियाँ फेरकर 'हैप्पी होली' भेज देते हैं।

और हाँ!

"बुरा न मानो होली है" की मनुहार के साथ रंग लगाने की जगह अब मारपीट और उधम मचाने का चलन बढ़ गया है।जैसे होली पर वारदात करने का लाइसेंस मिल गया हो!

भांग की जगह अब शराब का चलन ज़्यादा हो गया है।
और तो और, कुछ 'पर्यावरणविद्' भाई लोग "पानी बचाओ" का नारा लगाकर, रंगहीन होली का प्रचार कर रहे हैं!करेला वो भी नीम चढ़ा ..
आइए, इस होली पर एक नई शुरुआत करें!
वापस लौटें उसी पुरानी होली की तरफ—
जहाँ रंगों से ज़्यादा रिश्तों की मिठास होती थी।
चलो इस बार, हम सब मिलकर एक ऐसी होली मनाएँ—
जहाँ मोहब्बत का रंग सब पर छा जाए और हम सब एक-दूसरे को दिल से गले लगाएँ।
आओ, मिलकर होली के इस त्योहार को फिर से उसी पुरानी खुशियों और आपसी प्रेम से भर दें!

डॉ मुकेश गर्ग असीमित
(गंगापुर सिटी राजस्थान)

फगुनारे गीत

मिथिलेश बड़गैयाँश्री
जबलपुर (मध्यप्रदेश)

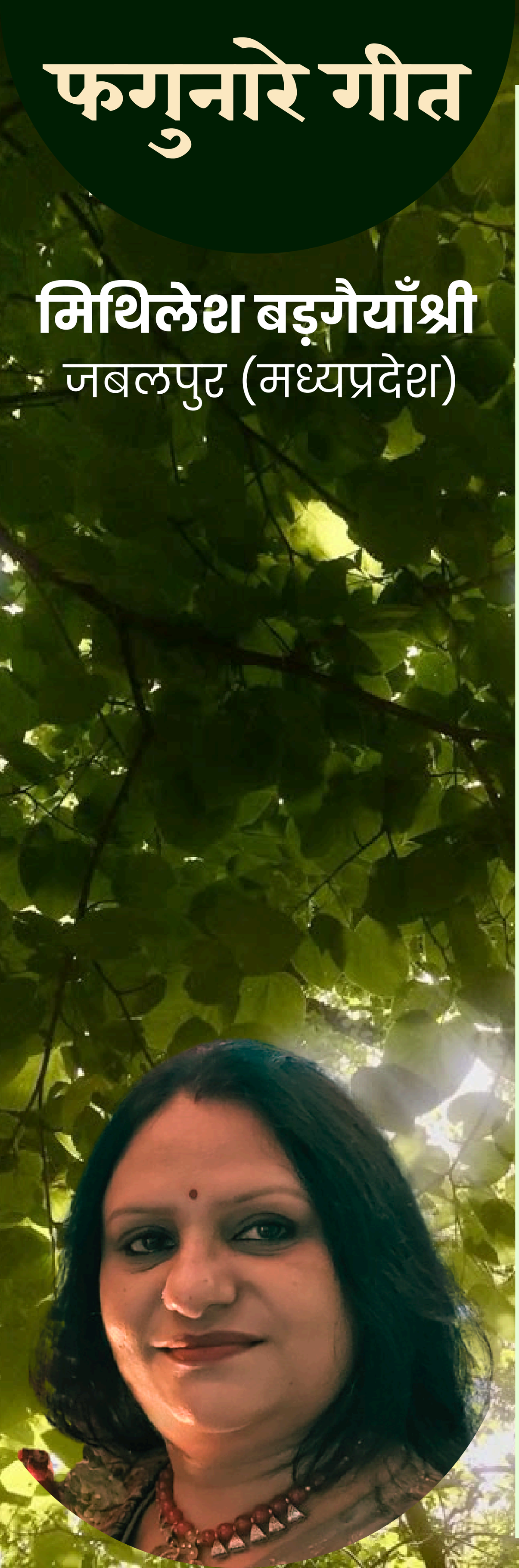

मौसम ने रच डाले, फगुनारे छंद।
बात लगे प्रियतम की ,जैसे गुलकंद।

अलकों को छेड़ रही ,फागुनी बयार।
अँगड़ाई लेती है , रसवंती नार।
मुस्कानें अधरों पर , आज मंद - मंद।
बात लगे प्रियतम की ,जैसे गुलकंद।

सुधियों के झूले में, प्रियता की रीति।
मन को भरमाती है, छलिये की प्रीति।
गुड़ होता चींटी को , जैसे पसंद।
बात लगे प्रियतम की ,जैसे गुलकंद।

सेमल के पुष्पों-सा, रस-रंजित अंग।
आकर्षण चितवन में, भर रहा अनंग।
अलियों को ललचाता, जैसे मकरंद।
बात लगे प्रियतम की ,जैसे गुलकंद।

कानन में दहक रहे, टेसू के फूल।
विरहन को सेज लगे, चुभते ज्यों शूल।
जीत गईं मनुहारें, अनबन है बंद।
बात लगे प्रियतम की ,जैसे गुलकंद।

रचा लिया हाथों में , साजन का प्यार।
अपनों को छोड़ चली, करके शृंगार।
साजन का रूप सखी,ज्यों परमानंद।
बात लगे प्रियतम की ,जैसे गुलकंद।

कुछ समय की हांक पर अमल करते मौसम, कुछ मौसम के मिजाज के अनुरूप अपनी सेहत, अपने रंग - ढंग बद लते पेड़ - पौधे और कुछ कुछ इन दोनों ही बदलावों के मद्देनजर पक्षियों की अपनी आवाज का जादू बिखेरना ऐसा है जो मौसमी बदलाव का संकेत तो देता ही है, अन भिज्ञों को उसके अर्थ से भिज्ञ भी करा देता है। कहना गलत नहीं होगा कि समय की चाल पर चलता बसंत खुद थिरकता हुआ दस्तक देने लगता है, क्योंकि पलाश समय पर ही दहकते हैं। सेमल समय पर ही दिगंबर होते हैं और कोयल की मीठी तान पर जब फूलों की मुस्कुराहट पूरी निष्ठा के साथ परंपरा का निर्वाह करती है, तब प्रकृति इतिहास नहीं, मिथक बन जाती है, जिसके आगोश में छिपी होती है उस बसंत की रसभरी उमंग, उल्लास से परिपूर्ण एक उत्सव और उस उत्सव में डूब जाने को आतुर मन -प्राण। एक ऐसा उल्लास, जो फूलों के रंग से रंगा होता है, भावों की मिठास से आवृत्त होता है, भौरों के गुंजार से ध्वनित होता है, कोयल की कूक से लयबद्ध होता है, सेमल और पलाश के रंग से दहकता है। मिलन की प्यास इसी से बलवती होती है.... विरह की आग इसी साझे परिवेश की उपज है और जिस आग के सुलगते ही सब कुछ नया - नया लगने लगता है।

शिशिर की देहरी पर बसंत की दस्तक

तब मन फुदकने लगता है... आंखों से बेफिक्री झांकने लगती है ... हाथ खुजलाने लगते हैं... और इन मीठी - गुद गुदाती अनुभूतियों के बीच कुछ नया पाने, कुछ नया बनने और कुछ नया जीने का संकल्प मजबूत होने लगता है।

लेकिन संकल्प क्या सच में मजबूत हो रहा है आज ?

शायद नहीं, क्योंकि संकल्प हुड़दंग से नहीं, शालीनता से मजबूत होता है और शालीनता रंगों में छिपे संदेश को सम झने और उस पर अमल करने से आती है। लेकिन आज इस संदेश को समझने वाले लोग कितने हैं, जो यह बता सकें कि खेतों में सरसों के वासंती रंग का मतलब क्या है ? तीसी का जमीन पर ही नीले आकाश का सृजन, साक्षात वसंत बन कर झूमते गेंदा और बौरों से लदी डालियों के यौवन - बोध कराने का मर्म कौन समझता है ? कोयल की कूक ही जब नई पीढ़ी के लिये अर्थहीन हो जाय, तब सुबह का चिहुंकना, शाम का इतराना, रात का पीड़ा बढ़ाना, दिन का ठिठोली करना और कुल मिला कर बसंत का अर्थ समझना इतना आसान है क्या ?

राजेंद्र सिंह

(भागलपुर)

होली मनाओ, पानी बचाओ

सुरेंद्र डोगरा
धर्मशाला (हिमाचलप्रदेश)

हमारे देश में आदमी को जहाँ पीने के लिए ठीक से पानी नहीं मिलता, रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरी करने के लिए दूर-दूर से पानी लाकर उसकी व्यवस्था करनी पड़ती है, ऐसे में पानी का दुरुपयोग कितना सही है?

इस पानी के दुरुपयोग की बात को शायद ही कोई 'हाँ ' कहे लेकिन दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं, जिन्हें होली का त्योहार बहुत अच्छा लगता है। उन्हें होली खेलना, एक-दूसरे को कलर लगाना, रंगों से पट जाना, घरभर को तरह-तरह के रंगों से भर देना बहुत अच्छा लगता है। लेकिन यहाँ समस्या होली खेलने की नहीं, 'पानी' की है। जैसे जैसे होली का त्यौहार आता है, रंगों रसायनों और मुहल्लों मेऔर पूरे शहर में भी पानी की किल्लत बढ़ जाती है और शहरों में पानी का जलस्तर घट जाता है और शहरवासियों की जल आपूर्ति कम कर दी जाती है। आज के युग में बिजली, पेट्रोल, खाने-पीने की चीजों और पानी आदि सभी पर महंगाई की भरपूर मार पड़ रही है। रंग भी सस्ते आते हैं, ऐसी बात नहीं है। पानी भी सस्ता मिलता है, यह भी बात नहीं है। जो बात है वह यह कि होली तो खेलें लेकिन ऐसी कि हमें रंगों को छुड़ाने के लिए ज़्यादा पानी खर्च न करना पड़े, तो ही हम असली होली का आनंद ले पाएंगे।

अगर आपके यहाँ पीने को पर्याप्त पानी, रोजमर्रा की सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पानी नहीं है,तो ऐसे में रंगों से रंगी इसी होली को खेलने के बाद उसे छुड़ाने के लिए कितने पानी को बर्बाद करना पड़ेगा? यह बात तो सोचने वाली है।

बिना रंगों के होली का पर्व अधूरा है, लेकिन केमिकल वाले रंगों से कई लोगों को स्किन में एलर्जी हो जाती है जिसके चलते कई लोग गुलाल और रंग खेलना पसंद नहीं करते हैं। ऐसे ही लोगों को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं हर्बल कलर्स, जो खासकर प्राकृतिक पदार्थों से बनाए जाते हैं जिसके उपयोग से त्वचा में कोई भी साइड इफेक्ट नहीं होता।

होली खेलो, खूब खेलो, जरूर खेलो, प्यार से खेलो, रंगों से खेलो लेकिन सिर्फ उन रंगों से जिसमें आपको पानी व्यर्थ न बहाना पड़े यानी सूखे रंगों की वह होली, जो आपके कपड़ों, आपके तन पर लगे रंगों को आसानी से साफ करने में आपकी मदद करे। ऐसी होली जो हाथ से झटकते ही कलर गायब हो जाए। होली के पावन त्योहार पर होली तो खेलो, लेकिन पानी बचाने का संकल्प भी लो और होली का मजा भी लूट लो। ऐसी रंग-बिरंगे हर्बल सूखे रंगों की होली खेलो और वसंतोत्सव के रंग में रंग जाओ!

एक बार फिर बीत गया महिलाओं का दिन

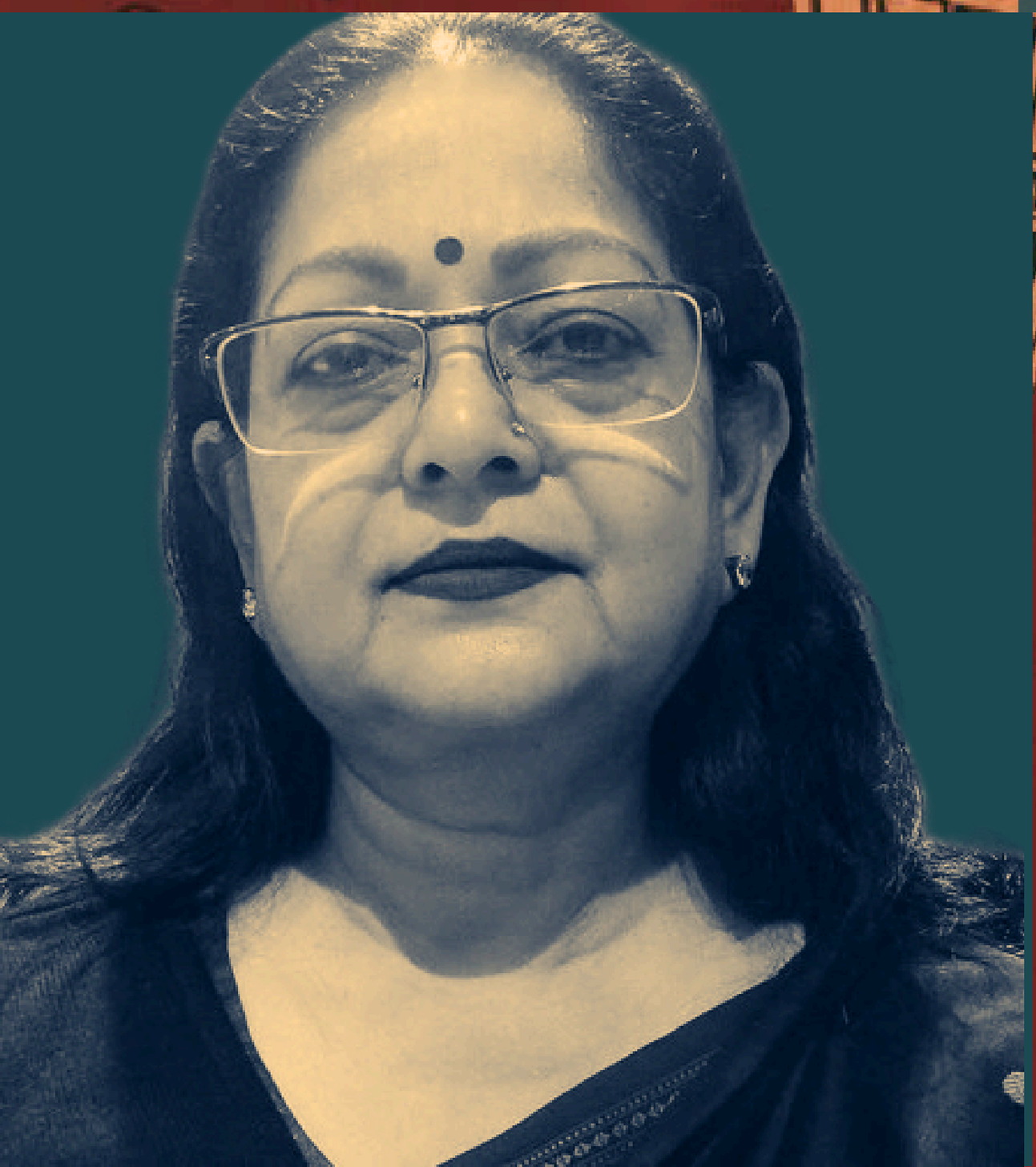

डॉ जेनी शबनम
दिल्ली

महिला दिवस के उपलक्ष्य में रंगारंग कार्यक्रम अपने चरम पर था। तय समय से ज़्यादा वक़्त हो गया, परन्तु कार्यक्रम पूरा नहीं हो सका। शाम के 7 बज गए, सभी महिलाएँ जाने को बेताब हो रही थीं, इसलिए कार्यक्रम को शीघ्र ख़त्म करने का बार-बार आग्रह कर रही थीं। आयोजक मंडली भी जल्दी-जल्दी सभी कार्यक्रम निपटा रही थी और हर वक़्ता को संक्षिप्त में बोलने का आग्रह कर रही थी। कुछ प्रतियोगिताएँ भी हुई थीं, जिसे शीघ्र निष्कर्ष पर पहुँचाया जा रहा था, ताकि परिणाम घोषित हो सके। सभी तबक़े की महिलाएँ यहाँ आमंत्रित थीं।

कार्यक्रम पूर्ण होने से पहले ही तक़रीबन आधी महिलाएँ वहाँ से जा चुकी थीं। जो मुख्य अतिथि और वक्ता थीं, वे बार-बार मोबाइल पर वक़्त देख रही थीं। एक महिला से यह पूछने पर कि अभी तो सिर्फ़ 7 ही बजे हैं, इतनी जल्दी क्या है, उन्होंने कहा "वे जबतक घर जाकर चाय नहीं बनाएँगी, उनके पति चाय नहीं पिएँगे, भले ही कितनी भी देर हो जाए। यों वे कुछ कहेंगे नहीं कि देर क्यों हुई, लेकिन हमारी परवरिश ऐसी हुई है कि शाम के बाद घर से बाहर रहने की आदत नहीं है। कोई कुछ न कहे फिर भी मन में एक अपराधबोध-सा होने लगता है।" किसी महिला को रात के खाना की चिन्ता हो रही है, किसी को उसके बच्चे की चल रही परीक्षा की, किसी को बाज़ार से होली का सामान ख़रीदना है, किसी को यह डर कि घर में सास-ससुर नाराज़ होंगे। किसी महिला का पति लेने पहुँच चुका है, तो उस महिला को मानसिक रूप से दबाव लग रहा कि उसका पति उसके कारण इन्तिज़ार में खड़ा है। मुश्किल से 10 महिलाएँ होंगी जो देर होने के बावजूद बेफ़िक्र होकर कार्यक्रम में भागीदारी कर रही थीं।

समय की पाबन्दी निःसन्देह आज की ज़रूरत है, लेकिन यह सिर्फ़ औरतों के लिए क्यों? यों ढेरों पुरुष हैं जो घर के कार्यों में योगदान देते हैं और एक समय सीमा के भीतर घर आ जाते हैं।

घर, बच्चे और पत्नी की जवाबदेही बख़ूबी निभाते हैं। अगर कभी देर हो, तो वे घर पर बता देते हैं, ऐसे में घर लौटने के बाद पत्नी या बच्चे प्रश्नसूचक दृष्टि से नहीं देखते हैं। उनके देर हो जाने से कोई कार्य नहीं रुकता, न देर से आने से पुरुष को कोई ग्लानि होती है। पर इसके उलट स्त्रियों के लिए वह सब होता है जो पुरुष के लिए नहीं होता। वह अगर देर तक बाहर है तो कहाँ होगी, कौन-कौन वहाँ होंगे, कैसे जाएगी, कैसे लौटेगी, कितने बजे लौटेगी इत्यादि प्रश्नों के बीच घिर जाती है।हाँ, सुरक्षा के दृष्टिकोण से यह सब जानना लाज़िमी है; परन्तु ये सभी प्रश्न पुरुषों के लिए भी उतने ही ज़रूरी हैं। पुरुष भी उतने ही असुरक्षित हैं जितनी स्त्रियाँ। इन सबके बावजूद स्त्री-पुरुष के लिए नियमों के अलग-अलग पैमाने तय हो चुके हैं, जो सर्वमान्य हैं।

शिक्षा, स्वास्थ्य, पहनावा, रहन-सहन इत्यादि हर पहलू पर ध्यान दें, तो पता चलता है कि हमारा समाज स्त्री और पुरुष दोनों के लिए अलग-अलग मापदण्ड रखता है और दोहरी नीति अपनाता है। स्त्रियों को उसके विरासत में स्त्री होना सिखाया जाता है और तय नियमों पर खरा उतरने की अपेक्षा की जाती है। वहीं पुरुषों के लिए बिल्कुल अलग दृष्टिकोण है। शिक्षित समाज में पुरुष से बस इतनी अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षा प्राप्त कर एक अच्छी नौकरी पा ले। अशिक्षित समाज में परिवार के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी उठाना पुरुष के लिए वांछित होता है, बाक़ी कुछ भी आवश्यक नहीं है। परन्तु स्त्रियों के लिए चाहे वह शिक्षित समाज हो या अशिक्षित, स्त्रियोचित गुण के साथ उन सारी ज़िम्मेदारियों का पालन करना आवश्यक है जिसे समाज ने उनके लिए निर्धारित किए हैं। अजीब बात यह है कि कोई भी व्यक्ति इस बात की पुष्टि नहीं करता कि ऐसे नियम समाज में स्थापित हैं। स्त्रियों की यह कसौटी पत्नी और माँ, बहु और बेटी में अन्तर कर देती है। जो क़ायदे किसी की पत्नी के लिए मानने आवश्यक हैं, वे उस पुरुष की माँ, बहन, बेटी के लिए ज़रूरी नहीं होते हैं। रिश्तों के साथ सारे समीकरण बदल जाते हैं। ऐसे में स्त्री गहन पीड़ा और अकुलाहट से भर जाती है कि ऐसा क्यों है? जो बातें किसी स्त्री के लिए वाजिब हैं, पुरुष के लिए ज़रूरी क्यों नहीं?

समाज या कानून में ऐसे कोई नियम या क़ायदे नहीं बनाए गए हैं, किन्तु व्यावाहारिक रूप से यही मान्य है और सत्य भी। जीवन का समीकरण आख़िर कैसे तय किया जाए? किन नियमों के तहत जीवन को ढाला जाए ताकि समय के साथ क़दमताल मिलाया जा सके? हम स्त्री व पुरुष की बराबरी की बात करते हैं, लेकिन यह तब तक सम्भव नहीं है, जब तक स्त्री व पुरुष को बुनियादी रूप से बराबर न माना जाए।सामजिक संरचना, सामाजिक दृष्टिकोण, प्रथाएँ, परम्पराएँ आदि हमारी सोच को इस तरह प्रभावित करती हैं कि कब हम इन नियमों को मानने लग जाते हैं, पता ही नहीं चलता। यों वह सारे नियम जो एक स्त्री के लिए मान्य है, यदि पुरुष भी पालन करने लग जाएँ, तो निःसंदेह समाज में समानता आ जाएगी। जो ग़लत नियम या परम्पराएँ स्थापित हो चुकी हैं, उन्हें स्त्री-पुरुष को मिलकर ध्वस्त करना चाहिए। जो तरीक़े या नियम पुरुष के लिए ग़ैरज़रूरी हैं वह स्त्री के लिए भी ग़ैरवाजिब होने चाहिए।

बहरहाल जीवन प्रवाहमान है। असंतुलन बना हुआ है। स्त्री-विमर्श की चर्चा हर जगह होती ही रहती है। कहीं स्त्री तो कहीं पुरुष प्रताड़ित होते रहते हैं। स्त्रियों की समस्याएँ विकराल और वीभत्स रूप से सामने आ रही हैं। इन सभी विषयों पर पूरे समाज को जागरूक होकर सोचने और निर्णय पर पहुँचने की ज़रूरत है। यह तभी मुमकिन है जब समाज में स्त्री-पुरुष बराबर हों और एक दूसरे का सम्मान करें।

बरसाने की लठमार होली

मथुरा और ब्रज की होली दुनियाभर में अपनी अनोखी छटा और परंपराओं के लिए जानी जाती है। यह भारत के सबसे रंगीन पर्व मनाने के अपने अनूठे तरीके लिए भी मशहूर है। इस दिन नंदगांव के ग्वाल बाल होली खेलने के लिए बरसाने जाते हैं, जहां गांव की महिलाएं उन पर लाठी बरसाती हैं। होली से कुछ दिन पहले यहां लट्ठमार होली का आयोजन होता है। कहा जाता है कि द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्रों के साथ राधा और उनकी सखियों के साथ लट्ठमार होली की परंपरा शुरू की थी। तब से आज तक यह परंपरा यहां निभाई जाती है।

बरसाना की लट्ठमार होली भगवान कृष्ण के काल में उनके द्वारा की जाने वाली लीलाओं का एक हिस्सा है। माना जाता है कि श्री कृष्ण अपने सखाओं के साथ कमर में फेंटा लगाए राधा रानी और उनकी सखियों के साथ होली खेलने बरसाने पहुंच जाया करते थे। उनकी हरकतों से परेशान होकर उन्हें सबक सिखाने के लिए राधा और उनकी सखियां उन पर डंडे बरसाती थीं। उनकी मार से बचने के लिए कृष्ण और उनके मित्र लाठी और ढालों का उपयोग किया करते थे, जो धीरे-धीरे होली की परंपरा बन गई। बता दें कि इस मनमोहक दृश्य को देखने के लिए हजारों की संख्या में लोग यहां आते हैं।भारत की ये 5 जगहें हैं महिलाओं के लिए सुरक्षित, सहेलियों के साथ या अकेले घूम सकती हैं बिना किसी डर के

पुरूषों को पहनने पड़ते हैं महिलाओं के कपड़े

लट्ठमार होली की एक और अनोखी परंपरा है। कहते हें कि हाली के दौरान जिस भी पुरूष से लठ छिन जाता है, उसे महिलाओं के कपड़े पहनने पड़ते हैं और सबके सामने नृत्य भी करना पड़ता है। यह उत्सव एक सप्ताह से ज्यादा समय तक चलता है। जिसमें पुरुष नाचते हैं गाते हैं और होली के रंग में डूबते चले जाते हैं।

शारीरिक पीड़ा हो जाती है दूर

बरसाने की लठमार होली से जुड़ी एक मान्यता और है। कहते हैं कि होली के दौरान ब्रज भूमि पर पड़ा गुलाल अगर शरीर की किसी चोट पर लगा लिया जाए, तो शारीरिक पीड़ा दूर हो जाती है। जानकार बताते हैं कि लठ खेलते हुए किसी को चोट लग जाए, तो यह गुलाल दवा के काम करता है। इसे लगाने के बाद वास्तव में उस व्यक्ति का दर्द कुछ ही देर में लुप्त हो जाता है। इसलिए ब्रज की भूमि को सदैव ही चमत्कारी माना गया है।

नंद महल भेजा जाता है होली का पहला निमंत्रण-

लठमार होली के दिन पूरे ब्रज में होली का एक अलग ही नजारा देखने को मिलता है। बरसाने में लट्ठमार होली लाडली के मंदिर में बड़े ही उत्साह के साथ खेली जाती है। इस उत्सव का पहला निमंत्रण सबसे पहले नंद गांव के नंद महल भेजा जाता है। इसके बाद ही बरसाने में नंदगांव के हुरियारे होली खेलने बरसाने आते हैं। इस दिन गोपियां लठ और गुलाल से हुरियारों का स्वागत करती हैं।

पौराणिक कथाओं के मुताबिक, वृंदावन में भगवान श्रीकृष्ण राधा जी और गोपियों संग होली खेलते थे। कृष्ण जी मथुरा से 42 किलोमीटर दूर राधा की जन्मस्थली बरसाना में आकर होली खेलते थे। तभी से लट्ठमार होली का चलन हो गया।

आज भी हर साल नंदगांव से पुरुष बरसाना पहुंचते हैं, जहां उनका स्वागत बरसाना की महिलाएं लाठियों से करती हैं। महिलाएं पुरुषों पर लाठियां बरसाती हैं और पुरुष ढाल से बचने की कोशिश करते हैं। यह उत्सव बरसाना के राधा रानी मंदिर के विशाल परिसर में मनाया जाता है।

रवींद्र पाण्डेय

रीवा(मध्यप्रदेश)

होली की फुहारें

सूखी सूखी सूनी सूनी लगती-सी होली
पर बरसती रंगीन फुहारे हैं
उड़ते चहुँ ओऱ अबीर - गुलाल पर
खेलते वे गुमसुम से हैं !
होली खेलू होली खेलू
कहता चंचल चित मेरा
पर खेलू किस संग मैं मन रे
तेरा चोर तो बसा कही ओऱ है !
है नहीं रंगों में अब वो लालिमा
और है नहीं जल में भी वो शीतलता
रहते विरह में नैना लाली में डूबे
गिरती अश्रु की बुन्दें ह्रदय पर
लागे यूँ होलिका दहन-सी
मत छेड़- छाड़ करो संग मेरे मन रे
नहीं खेलूंगी मैं तो होली
रंग चुकी मैं तो प्रेम रंग में
सूखी-सूखी सूनी- सूनी लगती -सी होली
पर बरसती रंगीन फुहारे हैं!
रग रग में रंग रंग चुका उनका
ऎ , मन ! ऎ , फुहार !, पहुंचा दे तू उन तक संदेशा
मलते वो ही रंग

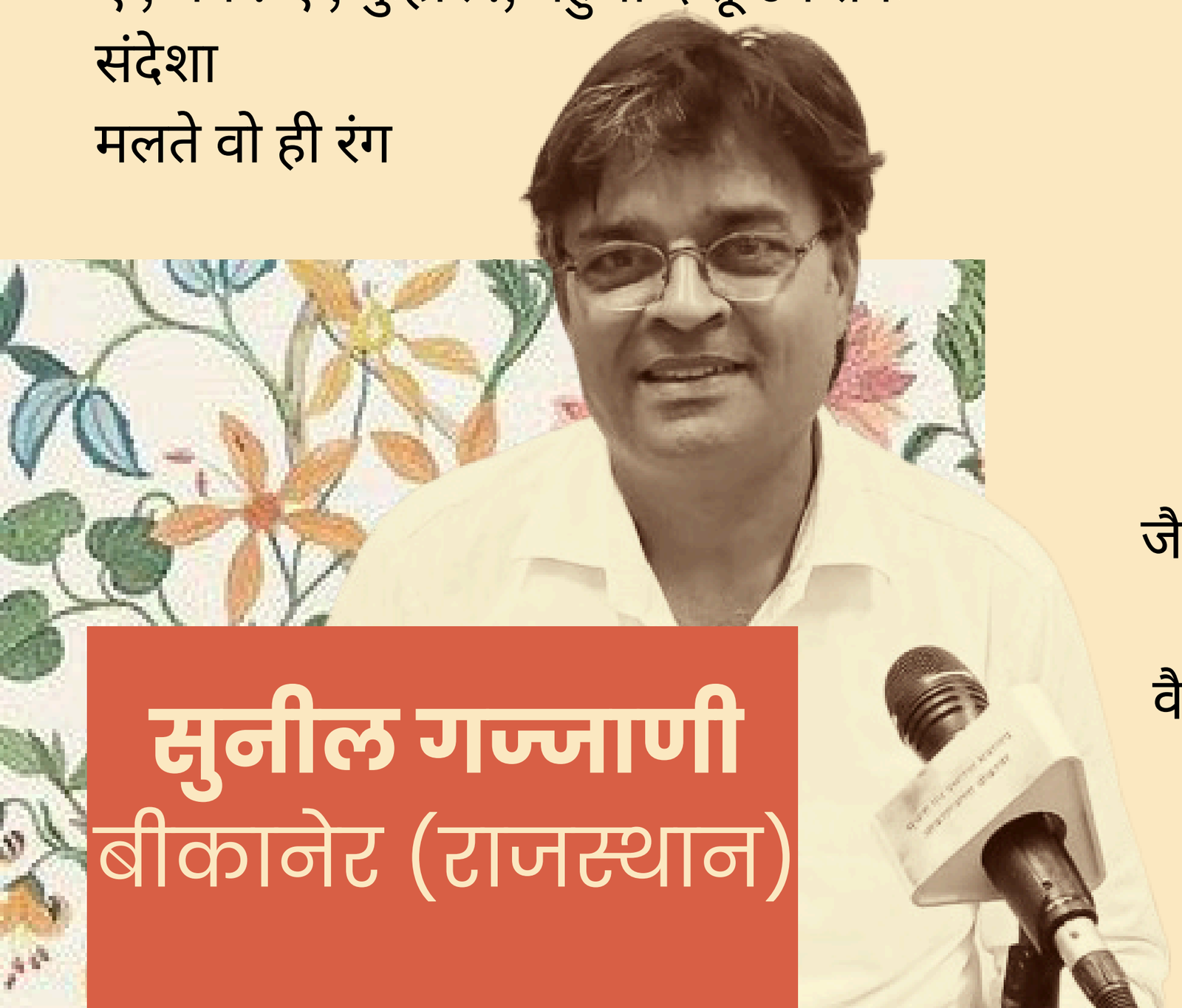

सुनील गज्जाणी
बीकानेर (राजस्थान)

जो तन पे मेरे मेल करे
जानते है वो रंगों की परिभाषा
पर बरसती रंगीन फुहारे हैं!
रग रग में रंग रंग चुका उनका
ऎ , मन ! ऎ , फुहार !, पहुंचा दे तू उन तक संदेशा
मलते वो ही रंग
जो तन पे मेरे मेल करे
जानते है वो रंगों की परिभाषा
जानते है वो होली का अर्थ
शायद , समझ गए तुम हिरणी रुपी मन
जैसे श्री कृष्ण बिन थी सूनी मथुरा की होली
वैसे ही है मेरा आँगन मथुरा - वृंदावन
बिन पिया लगती बैरागी सी होली
सूखी सूखी,,,,,,,,, रंगीन फुहारे हैं!

होलिका दहन में राशियों का प्रभाव

होली का त्योहार हिंदू त्योहार एकता, आनंद और परंपराओं का एक भव्य उत्सव है जिसकी धूम हिंदू पंचांग के अनुसार, होलिका दहन हर वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।इसी क्रम में आइए जानते हैं कि होलिका दहन के लिए शुभ मुहूर्त कब है और इसका महत्व क्या है।

होलिका दहन का शुभ मुहूर्त

होलिका दहन का मुहूर्त 13 मार्च, रात्रि 11 बजकर 26 मिनट से लेकर 12 बजकर 30 मिनट तक रहेगा। ऐसे में होलिका दहन के लिए कुल 1 घंटे 4 मिनट का समय मिलेगा। साल 2025 में होली के आस-पास चंद्रमा और शनि देव की चाल में बदलाव होने से कई राशियों पर शुभ प्रभाव पड़ने वाला है।

चंद्रमा का गोचर

5 मार्च को चंद्रमा वृषभ राशि में प्रवेश करेंगे.

वृषभ राशि में प्रवेश करते ही चंद्रमा और देवगुरु बृहस्पति की युति होगी,इस युति से गजकेसरी राजयोग का निर्माण होगा।इस वर्ष होली का त्योहार 14 मार्च को मनाया जाएगा, लेकिन इससे कुछ दिन पहले शुक्र ग्रह अपनी गति में परिवर्तन करने वाले हैं। होली से पहले, धन और समृद्धि के प्रतीक शुक्र ग्रह 2 मार्च को वक्री हो जाएंगे। शुक्र ग्रह का चाल बदलना और वक्री होना यह दर्शाता है कि वह अब उल्टी दिशा में चलेगा। इस समय शुक्र ग्रह अपनी उच्च राशि मीन में वक्री होने वाला है, जिससे कुछ राशियों के लिए अच्छे दिन शुरू हो सकतेहैं। आइए जानते हैं वे तीन भाग्यशाली राशियां कौन सी हैं।

कर्क राशि

शुकर्क राशि के जातकों के लिए विशेष लाभकारी साबित हो सकती है।धर्म और कर्म के कार्यों में उनकी रुचि बढ़ सकती है। आर्थिक दृष्टि से यह समय अत्यंत शुभ रहेगा। रचनात्मक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में सफलता मिलने की संभावना है। इस दौरान की यात्राएं, पदोन्नति और आय में वृद्धि की भी संभावना है।आर्थिक स्थिति पहले से और मजबूत होगी। प्रेम संबंधों में भी सुधार देखने को मिल सकता है।

धनु राशि

धनु राशि के जातकों के लिए इस अवधि में जातक के भौतिक सुखों में वृद्धि हो सकती है। नौकरी की तलाश कर रहे जातकों को इस समय खुशखबरी मिल सकती हैऔर और कार्यस्थल पर प्रमोशन के अवसर भी बन सकते हैं। उनकी आय में बढ़ोतरी के आसार हैं, प्रेम संबंधों में भी सुधार के संकेत मिलेंगे, और जीवनसाथी का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। वाहन या संपत्ति खरीदने के अवसर भी सामने आ सकते हैं, और माता-पिता के साथ संबंध और भी गहरे होंगे।

मीन राशि

मीन राशि के जातकों के व्यक्तित्व में अद्भुत निखार देखने को मिल सकता है। प्रेम जीवन में सुधार के साथ-साथ मधुरता भी बढ़ सकती है। करियर और पारिवारिक विवाद और दांपत्य जीवन में चल रही अशांति समाप्त हो सकती है।साझेदारी में किया गया व्यापार भी बड़े लाभ दे सकता है.

होलिका दहन के दिन राशि के मुताबिक अलग-अलग वस्तुएँ करनी चाहिए. इससे सफलता मिलती है, साथ ही बुरा असर कम होता है।

मेष राशि वाले लोग गुड़ दान करें।वृषभ राशि वाले लोग मिश्री दान करें।मिथुन राशि वाले लोग गेहूं की बाली और चने की दाल दान करें।कर्क राशि वाले लोग सफ़ेद तिल, चालन, और सौंफ़ दान करें।सिंह राशि वाले लोग लोबान दान करें।कन्या राशि वाले लोग हरे पान का पत्ता या हरी इलायची दान करें।तुला राशि वाले लोग कपूर दान करें।वृश्चिक राशि वाले लोग चने की दाल दान करें। धनु राशि वाले लोग चना दाल और गुड़ दान करें। मकर राशि वाले

होलिका दहन के अगले दिन सुबह उठकर भगवान विष्णु, भगवान श्रीकृष्ण, और अपने आराध्य देवों की पूजा करें।
पूजा के बाद घर के बड़े-बुज़ुर्गों से आशीर्वाद लें एवं ज़रूरतमंदों को दान करें।

ज्योतिषाचार्य
बसंत सोनी
खरगोन (मध्यप्रदेश)

साक्षात्कार:
अंशु त्रिपाठी केतकी जानी "अग्निजा"के साथ

अंशु: बचपन में आपके परिवार के साथ संबंध कैसा था?

अग्निजा:

मैं साफ शब्दों में कहूँगी कि मेरा बचपन बहुत बुरा और काफ़ी यातनाऔर मानसिक कष्टों से भरा रहा। मेरे परिवार वालों को लड़का चाहिए था मगर मैं पैदा हो गई।मेरे इस दुनिया में आने की ख़बर भी लोगों को " दूसरा पत्थर आया " जैसे शब्दों से दी गई थी इस बुरे वक्त में मेरी माँ को मुझे अपने मायके यानी मेरे मामा के घर ही रखना पड़ा। मै वहीं पली और बड़ी हुई. माँ मेरी सबसे बड़ी ताकत थी, है और सदैव रहेगी।

अंशु: जब आपको एलोपेसिया हुआ तब उस वक़्त आपकी उम्र क्या थी? आपको बुरा लगा? क्या ये जानकर आप डिप्रेस्ड थीं?

अग्निजा:

वह 2010 की साल थी। 40 वर्ष की मैं आफिस में बैठी थी, तब एलोपेसिया ने पहली दस्तक दी। उससे मेरी ख़ुशहाल जिंदगी तहस-नहस होने लगी। अपने इस ऑटो इम्यून डिसआर्डर के कारण लंबे,काले, रेशमी और खुबसूरत बाल पूरी तरह से गंवा देने के बाद मैं खूब रोयी, सामाजिक बहिष्कार झेली और प्रताड़ित भी हुई, डिप्रेशन के कुंए में डूबने की कोशिश की। यहाँ तक कि फाँसी के फंदे तक भी पहुंच गई। मगर शायद ईश्वर ने मुझे किसी ख़ास काम औरविशेष ज़िम्मेदारी के लिए ज़िन्दा रखा।

अंशु: एलोपेसिया के दौरान आपने संघर्ष कैसे किया? आप ट्रीटमेंट कैसे लेती थीं?

अग्निजा:

लोग मेरे गंजे सिर का मज़ाक़ बनाने लगे थे। कुछ लोग तो मुझे अभिशप्त भी मानने लगे थे। बीमारी के कारण बाल झड़ना शुरू हुए तो मैं स्वाभाविक रूप से डिप्रेशन में चली गई और खुदकुशी तक की कोशिश भी कर ली। मैंने Alopathy, Homeopathy, Aayurved, Yunaani सहित सब दवाई/ Treatment ली, ना कोई इलाज छोड़ा, न कोई क़सर छोड़ी।

अंशु: आत्महत्या की नाक़ाम कोशिश और डिप्रेशन में जाने के बाद आपने खुद को कैसे संभाला?

अग्निजा: मेरे जैसी ज़िंदा लाश को संजीवनी दी बेटी पुण्यजा, बेटे कुंज और मेरा सबसे प्यारा पालतू पुकु और निकी ने संभाला और उन सबने मेरी जिजीविषा क़ायम रखी माँ का आशीर्वाद, भाई भाभी का प्यार, ढेरों interview छापने वाले पत्रकार, मुझे सौंदर्य प्रतियोगिता में स्टेज देनेवाले अनेकों लोग, एक भी पैसा लिए बिना ही अवार्ड देनेवाली संस्थाएँ, सोशल मीडिया से मिल रहा स्वीकार ये सब ने संभाला है मुझे. मैंने स्वीकार कर लिया कि मेरी समस्या का इलाज नहीं और अब ताउम्र साहसपूर्वक जीना है।

अंशु: एलोपेसिया के कारण जब आप अकेले हो गए, अपने लोग छूट गये, तब आपने संघर्ष कैसे किया? आपका करियर कैसे चल रहा था?

अग्निजा: फ्रेंकली, आगे बताया वैसे दोनों बच्चे और दोनों कुत्ते मेरे जीने की वजह,सहारा और ताकत थे। इन्हीं के कारण अन्याय, अत्याचार और न जाने कितनी ही शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना मिली डिप्रेशन की काल कोठरी से मैं ज़िंदा बाहर आ पाई। चुनौती बहुत गंभीर थी: एक सऔरत को ख़ुद से,परिवार से और समाज से संघर्ष करना था। गिरना,उठना,दौड़ना और अंततः जीतना था। कैरियर की फ़िक्र कभी नहीं रही। बालभारती / कार्य स्थल से मुझे काफ़ी मान-सम्मान, प्यार और आर्थिक मजबूती और सम्मान भी मिला।

अंशु: आपने करियर के तौर पर मॉडलिंग के लिए चुना.. क्या यह आपके लिए पॉजिटिव था?

अग्निजा:
मॉडलिंग के लिए डिप्रेशन से बाहर निकल कर मैने ठंडे दिमाग से सोचा कि एलोपेसिया मेरी कोई ग़लती का परिणाम नहीं है। न इस के कोई कारण ज्ञात हैं और न कोई इलाज है। फिर भी मुझे क्यों ढेर सारी तकलीफ़ झेलनी पड़ी? क्योंकि इस के बारे में अज्ञान है। उसे शर्मनाक माना जाता है और पाप की तरह छुपाया जाता है। मुझे एलोपेसिया के बारे में जागरूकता लानी थी। इस की शुरुआत खुबसूरती के प्रस्थापित मानक तोड़ने से करना चाहती थी। लंबे बालों वाली को ही क्यों सुंदर मानना? इसलिए मैंने सौंदर्य स्पर्धा और मॉडलिंग को टार्गेट किया।

अंशु: एलोपेसिया ही शारीरिक सुंदरता है... क्या यह सही है? और यह सोच आपकी कैसे बदली?

अग्निजा:
पांच साल बाद, मैं अपनी इसी बीमारी के साथ "मिसेज इंडिया वर्ल्डवाइड" की पहली फाइनलिस्ट बनीं। गंजेपन की स्वीकृति इतना भी मुश्किल नहीं था।घर-परिवार और समाज के पास उनके लिए ढेरों सवाल थे। लेकिन मैंने सबको एक ही जवाब दिया-हां, मैं गंजी हूं, लेकिन मेरे पास एक सुंदर दिल और सुंदर विचार शक्ति वाला मन है।" समाज क्या सोचता है, इससे उन्हें फर्क न तो तब पड़ा न अब। मैं अपने विश्वास से चमकते सुंदर चेहरे और चमकदार गंजे सिर के साथ शान से बाहर निकलने लगी।

अब मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि सुंदरता के सामाजिक मानकों में फिट हूँ या नहीं, क्योंकि अंत में जो मायने रखता है वो यह है कि क्या आप खुद पर और अपने आंतरिक सौंदर्य पर विश्वास करते हैं या नहीं?

अंशु:
क्या आप एलोपेसिया के बारे में पॉजिटिव हैं? और कैसे?

अग्निजा:
बिलकुल पॉजिटिव हूँ अब, की सिर्फ़ बाल नहीं जिंदा तो हूँ ना? फ़िर क्यूँ रोज़ रोज़ बाल के लिए सोच सोच मरना? मैंने संभलना शुरू किया ही था कि यकायक शाह सर से मिलना हुआ। उन के अंदर के पत्रकार मेरे गंजेपन के बारे में पूरे सम्मान और संवेदनशील के साथ सवाल पूछने लगे। मुझे यह सब बातें करना पसंद नहीं था: क्या मतलब है अपना रोना सब को सुनाने का? फिर भी न जाने क्यों मैंने उत्तर दिए। वे और पूछते रहें और मैं भी बताती गई. लेकिन अंततः मुझे उन पर बहुत गुस्सा आया। रात देर तक रोती रही: 'क्यों मेरे घावों के कुरेद रहे हैं? मुझे अतीत की जलती खाई में फिर से ढकेलकर क्या हासिल होगा उन्हें? पर सुबह तो चमत्कार ही हो गया। सालों से दिलो-दिमाग में पनप रही नकारात्मकता, घावों में कुदते कीड़े, आक्रोश और गुस्सा ग़ायब थे, मैं हल्की-हल्की हो गई। न किसी से कोई शिकवा न रहा न कड़वाहट भी रह गया अब मैं अपने जीवन व संघर्ष को निष्पक्ष होकर देख पाती हूँ। पहले जैसे दर्द या क्रोध से मुक्त हो गई। अब मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं। मैं सिर्फ अपने एलोपेशिया अवेयरनेस मिशन के लिए जी रही हूं। मेरी पूरी जीवनी जानने के लिए मुझ पे जाने-माने और लेखक और पत्रकार प्रफुल शाह ने लिखा उपन्यास 'अग्निजा' पढ़िए, जो हिन्दी और गुजराती में उपलब्ध है और शीघ्र मराठी में भी आ रहा हैं। सोशल मीडिया के जरिए भी मैं काउन्सिलिन्ग करती हुं। मुझे संतोष व गर्व है कि कुछ ज़िन्दगियां संवारने और बचाने में क़ामयाबी हासिल हुई है।

अंशु: क्या एलोपेसिया एक गंभीर रोग है? और देश में तमाम एलोपेसिया से ग्रसित पॉजिटिविटी बनाये रखते हुए आप देश के लोगों के साथ क्या मैसेज देना चाहती हैं?

अग्निजा:

सबसे पहले समझ लीजिये कि एलोपेसिया कोई गंभीर रोग नहीं है। एक ऑटोइम्यून डिसऑर्डर कहना चाहिए उसे. लोग मुझे वही पुरानी बाल के साथ और सोच से दफ़नाना चाहते थे मगर उन्हें पता नहीं था कि मैं इस दुनिया में दुर्लभ हूँ और उनकी सोच से आगे सोचती हूँ।

सचमुच, अनगिनत लोग मुझे दफ़नाना चाहते थे, मन ही मन दफ़ना भी चुके थे। दर्दनाक बचपन और फिर एलोपेशिया ने मेरे बाल छीन लिए। बाल जानें के बाद अपनों ने और दोस्तोंने मुझ से किनारा कर लिया। जैसे मैं कोई जानलेवा वायरस हो गई! मैं चिल्ला चिल्ला कर कहती हूँ कि आप जैसे भी हो खुद को खूबसूरत मानो, ख़ुद से बेपनाह प्यार करो। अपने आपको ईश्वर की अद्भुत रचना समझो। आप खुद से प्यार करो तो लोग भी करेंगे।

होली के दोहे

प्रमुदित मन संचित करे,हरदम ही उल्लास।
रंग सदैव उमंग का, जीवन में मधुमास।१।

भाव भावना भेद को, नेक लगायें रंग।
अमिट रहेगा उम्र भर, सहज नेह का ढंग।२।

नयन झुकाये लाज से, अधर सजी मुस्कान।
प्रिय के रंग में रंगी,सजनी एक सुजान।३।

तन मन पर यूँ छा गया, रंग गुलाल अबीर।
लोकलाज सब भूल कर, अंतस हुआ अधीर।४।

रंग एक हो मीत का, सतरंगी हो प्रीत।
विश्वास अटल प्रेम का, मन को लेता जीत।
५।

होली की शुभकामना, करिये मीत कबूल।
ईर्ष्या द्वेष अतीत के, दर्द हृदय के भूल।६।

बचें केमिकल रंग से, कर देते बीमार।
प्राकृतिक रंग ही सदा,खुशियों का उपहार।
७।

निरुपमा मिश्रा
बाराबंकी(उत्तरप्रदेश)

होली में संतुलित इकोसिस्टम

भारत में 14 मार्च को होली मनाई गयी। उस दिन शाम को करीब हर शहर और गांव में होलिका दहन होता ही है, अधिकतर जगहों पर होली लकड़ियों से जलाते हैं लेकिन उनको पता नही है कि लकड़ियों से होली जलाना कितना हानिकारक होता है वहीं दूसरी ओर गाय के गोबर के कंडों से होली जलाने से अनेक अद्भुत फायदे होते हैं, इसलिए आप इस बार से हर साल गाय के गोबर के कंडो से ही होली जलाएं। देश में पर्यावरण को बचाने के लिए नागरिक प्राचीन काल से ही जागरूक हैं। ग्वालियर में पिछले 85 साल से कंडों की होली जलाई जा रही है।

🚩इंदौर (मध्य प्रदेश) में छोटी-बड़ी करीब 20 हजार से ज्यादा होलियां जलती है, इस दिन यदि लकड़ियों के बजाय गोबर के कंडों की होली जलाई जाए तो शहर की 150 गौशालाओं में पल रही लगभग 50 हजार गाए अपना सालभर का खर्च खुद निकाल लेती हैं।

🚩एक गाय रोज 10 किलो गोबर देती है। इस तरह इंदौर सहित प्रदेशभर में रोज 12 लाख किलो गोबर निकलता है। 10 किलो गोबर को सुखाकर 5 कंडे बनाए जा सकते हैं।

🚩होली पर देश में में1.5-2 करोड़ कंडों की जरूरत होती है, जिसके पर्याप्त इंतजाम हैं।

आपको बता दें कि केवल 2 किलो सूखा गोबर जलाने से 300 ग्राम ऑक्सीजन निकलती है। #एक गाय रोज 10 किलो गोबर देती है। इसकी राख से 60 फीसदी यानी 300 ग्राम ऑक्सीजन निकलती है। वैज्ञानिकों ने शोध किया है कि गाय के एक कंडे में गाय का घी डालकर धुंआ करते हैं तो एक टन ऑक्सीजन बनता है।

🚩कंडे की होली और गोबर खाद खरीदकर समाज में गौशालाओं को स्वाबलंबी बनाया जा सकता है।

गोबर के कंडे जलाने से पेड़ों के कटने की संख्या में कमी आएगी। 2 किलो सूखा गोबर जलाने से 300 ग्राम ऑक्सीजन मिलता है, यानी इसके धुएं से पर्यावरण में आक्सीजन में बढ़ोतरी होती है। इसके धुएं से मच्छर, कीटाणु व दुर्गंध समाप्त हो जाती है। जबकि लकड़ी जलाने से उठने वाले धुएं से पर्यावरण नहीं होता है। एक पेड़ से 8 क्विंटल से लेकर 5 टन तक लकड़ी निकलती है यानी लगभग 55 पेड़ों से 600 क्विंटल लकड़ी मिलती है। ऐसे में शहर की 60 होलिका दहन में 55 पेड़ों की बलि दी जाती है। अगर अन्य स्थानों पर भी लकड़ी की जगह कंडे का उपयोग किया जाता है तो 55 पेड़ों की जिंदगी बचाई जा सकती है। इसका अर्थ है कि होली में लकड़ियों के साथ जलाने से लाखों एवं करोड़ों लकड़ियों की जान बच जाती है। फ्लस्वरूप होलिका दहन के दौरान कार्बन मोनोऑक्साइड का धुंआ भी निकलता है, जो जह और भारतवासियों को स्वास्थ्य काजानलेवा खतरा भी बढ़ जाता हैऔर उनके फेफड़े भी कमज़ोर और बीमार हो जाते हैं अब फैसला आप पर टिका हुआ है कि देश में होलिका दहन के लिए स्वस्थ पर्यावरण हेतु लकड़ियों का इस्तेमाल करें या गाय के कंडों से..? तभी हम होली में पर्यावरणीय संतुलन बनाये रख सकेंगे और आजीवन स्वस्थ बनेंगे।

सर्वेश सिंह

बलरामपुर(उत्तरप्रदेश)

होली के रंग प्रकृति के संग

होली का त्योहार बेहद ख़ास होता है क्योंकि यह रंगों से सराबोर इकलौता त्यौहार हैं ।प्रत्येक सम्प्रदाय,जाति व प्रदेश के लोग इस त्योहार को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। हर तरफ रंग, अबीर और गुलाल उड़ता नज़र आता है और लोग इन्हें एक दूसरे के चेहरे पर लगाते हैं। कई बार कृत्तिम रंगों का इस्तेमाल स्किन इंफेक्शन का कारण बन जाता हैं और कई समस्याओं की वजह बन जाता हैं। दरअसल, अबीर और गुलाल में तरह-तरह ज़हरीले कैमिकल्स कई बार मिले होते हैं जो चेहरे एवं त्वचा पर खुजली मुंहासे, खँरोच समेत घाव व खुश्की जैसी समस्याओं का कारण बन सकते हैं। इतना ही नहीं कुछ रंग तो आपकी त्वचा को जला सकते हैं। जिनका इलाज और उपचार सालों साल लग जाता है। ऐसे में जरूरी है कि त्वचा स्वस्थ, मुलायम और चमकदार रखने के लिए होली में आप इन सलाह एवं उपाय को अपना लें और होली के रंगों को अपने घर में ही बना लें।

लाल हिबिस्कस (गुड़हल)के फूलों को तब तक धूप में सुखाएं जब तक वे सूखे और कुरकुरे न हो जाएं, और फिर मिक्सी में उन्हें बारीक पाउडर में पीस लें। इसके लिए आप लाल चंदन और गुलाब की सूखी पंखुड़ियों के पाउडर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। पाउडर की मात्रा बढ़ाने के लिए आप चावल का आटा बराबर मात्रा में मिला सकते हैं। गीला लाल रंग बनाने के लिए आप अनार और टेसू के फूल छिलकों को पानी में उबाल सकते हैं। यह गौरतलब है कि टेसू और अनार के रंगीन एवं गीले रंग शरीर पर मुलायम अस्थायी एवं 200%सुरक्षित हैं।

आप हल्दी पाउडर को बेसन को मिलाकर सूखा गुलाल बना सकते हैं. इसके अलावा आप किसी भी पीले रंग के फूल, जैसे गेंदा या पीले गुलदाउदी, को खरल में कूट के पाउडर बना सकते हैं और गीले रंगों के लिए पानी में मिला कर ऑर्गेनिक कलर बना सकते हैं।

हरे रंग का प्यारा गुलाल पाने के लिए आप मेहंदी या मेहंदी पाउडर का इस्तेमाल कर सकते हैं। या पालक जैसी हरी पत्तेदार सब्जियों का उपयोग कर सकते हैं। पालक के पत्तों को धूप में सुखा दें और सूखी पत्तियों को पाउडर बनाकर पीस लें। इस तरह से आप हरा प्राकृतिक एवं सुरक्षित रंग इस्तेमाल कर सकते हैं।

कटे हुए चुकंदर को कद्दूकस करके पानी में भिगो दें, मिश्रण को उबाल लें और रात भर के लिए छोड़ दें. अगर आप अधिक गुलाबी रंग चाहते हैं, तो मिश्रण को थोड़ा और पतला करें इसलिए आपका लाल गीला रंग आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए आप लाल प्याज का भी इस्तेमाल कर के गुलाबी ऑर्गेनिक रंग बना सकते हैं।

नीले गुलाल के लिए नीले गुड़हल की पंखुड़ियां, कपड़े धोने की सूखी नील और चावल का आटा मिलाएं। गीले रंगों के लिए जकरंदा के सूखे फूल पानी में मिलाएं। घर में बने कोमल और सुरक्षित रंगों से guilt-free होली का आनंद लें!

शैलजा त्रिपाठी,
(अध्ययनरत)
दिल्ली

कुमाऊं की होली

उत्तराखंड की होली देश मे ब्रज के बाद सबसे ज्यादा विख्यात मानी जाती रही है। होली की हुडदंग में इसमें प्रयुक्त गायन इस त्यौहार का मज़ा दुगना कर देता है।

रंगों के इस त्यौहार में दो तरह से होली गायन रहता है , बैठकी होली और खड़ी होली। बैठकी होली यानि जो होली बैठ कर गायी जाती है और खड़ी होली:- जोकि खड़े होकर सामूहिक नृत्य के साथ चौराहे चौबारों में गायी जाती है। खड़ी होली ग्रामीण अंचल की ठेठ सामुहिक अभिव्यक्ति है जबकि बैठकी होली को नागर होली भी कहा जाता है। बैठकी होली शास्त्रीय संगीत की बैठकों में रची-बसी होते हुए भी लोकमानस से इस प्रकार जुड़ी हैं कि उस महफिल में बैठा हुआ प्रत्येक व्यक्ति उसमें अपने को गायक मानता है और गायक,श्रोता के बीच कोई दूरी नहीं होती है। विभिन्न रागों से सजी होली बैठकी की इस परम्परा में अनगिनत गीत हैं जिन्हें श्रुतियों से पीढ़ी दर पीढ़ी गाया जा रहा है।

प्राचीन वर्ण व्यवस्था की एक मान्यता के अनुसार रक्षाबन्धन, दशहरा, दीपावली व होली में से होली शूद्रों का प्रमुख त्यौहार कहा जाता है परन्तु इस पर्वतांचल में यह उच्च वर्ग का प्रमुख त्यौहार बनकर उभरा। पौष के प्रथम रविवार से विष्णुपदी होली के बाद बसन्त, शिवरात्रि अवसर पर क्रमवार गाते हुए होली के निकट आते-आते अति श्रृंगारिकता इसके गायन-वादन में सुनाई देने लगी। यहाँ कई गाँवों में होली के साथ-साथ झोड़े-चांचरी लोक नृत्यगीत शैली का चलन भी है।

कुमाऊँ की होली के काव्य स्वरूप को देखने से पता चलता है कि कितने विस्तृत भावन इन रचनाओं में भरे हैं। इसी प्रकार इसका संगीत पक्ष भी शास्त्रीय और गहरा है। पौष के प्रथम रविवार से होली गायन की यहाँ जो परम्परा बन चुकी है, उसकी नींव बहुत सुदृढ़ है। पहाड़ का प्रत्येक कृषक आशु कवि है, गीत के ताजा बोल गाना और फिर उसे विस्मृत कर देना सामान्य बात थी। इसीलिये होली गीतों के रचियताओं का पता नहीं है। कतिपय विद्वानों के बारे में पता चलता है कि इन्होंने रचनाएं रचीं हैं। इनमें सबसे प्रथम तो पं.लोकरत्न पन्त 'गुमानी' का नाम है। इनकी एक रचना जो राग श्यामकल्याण के नाम से अधिकांश सुनाई देती है-

"मुरली नागिन सों, वंशी नागिन सों कह विधि फाग रचायो, मोहन मन लीनो।।
मुरली व्रज बांवरो मोसे बांवरी कहत है,
अब हम जानी, बांवरो भयो नन्दलाल।।मोहन
सूरन के प्रभु गिरिधर नागर,
कहत गुमानी दरस तिहारो पाया।।मोहन

रचनाकार चारु चन्द्र पाण्डे द्वारा भी होली बैठकी के लिये कई रचनाओं को रचा। श्री पाण्डे जी पहाड़ की होली बैठकी के मिजाज से परिचित हैं, सो उन्होंने उसी तरंग की रचनाओं को गुंथा जो काफी लोकप्रिय हैं। उदारहण के लिये-

धमार

झलकत ललित त्रिभंग मधुर श्री रंग, जब धरी रे मुरलिया।
फाग मची, डफ झांझ झमक गये, बाजत बीन मृदंग।
'चारु' कदम तर शोभित नटवर, वारौ कोटी अनंग।।
मनसुख लाओ मृदंग नाचत आई चन्द्रावलि पग बांध घुंघरवा।
ताल परवावज बाजन लागे, अरु डफली मुरचंग।
'चारु' प्रिया संग श्यामसुन्दर पर, बरसाओ नवरंग।।"

इसी प्रकार कोटद्वार निवासी श्री महेशानन्द गौड़ की होली रचनाएं बहुत लोकप्रिय हैं। होली गीत गाने वाले अधिकांश को पता भी नहीं है कि वह किसकी लिखी रचना गा रहे है।
काफी राग पर गई जाने वाली एक लोकप्रिय रचना-
सबको मुबारक होली, फागुन ऋतु शुभ अलबेली।
घर-घर अंगना रंग अबीर है, खुशियों की रंगरेली,
तन रंग लो तुम प्रभु के रंग में, रंग लो मन की चोली।।'
होली बैठकी में सर्वाधिक रचनाएं राग काफी में गाई जाती हैं। इनमें भक्तिभाव से लेकर श्रृंगार तक की रचनाएं हैं। उदाहरण के लिये एक रचना-.
किन मारी पिचकारी, मैं तो भीज गई सारी।
जाने भिगोई, मोरे सन्मुख लाओ, नाहीं मैं दूंगी गारी।।
खड़ी होली का अभ्यास आमतौर पर गांव के मुखिया के आंगन में होता है। यह होली अर्ध-शास्त्रीय परंपरा में गाई जाती है जहां मुख्य होल्यार होली के मुखड़े को गाते हैं और बाकी होल्यार उसके चारों ओर एक बड़े घेरे में उस मुखड़े को दोहराते हैं। ढोल, नगाड़े, नरसिंग उसमें संगीत देते हैं। घेरे में कदमों को मिलाकर नृत्य भी चलता रहता है कुल मिलाकर यह एक अलग और स्थानीय शैली है। जिसकी लय अलग-अलग घाटियों में अपनी अलग विशेषता और विभिन्नता लिए है। होली का त्यौहार अपने आप में उल्लास लिए आता है। गुजिया, कचोडी, पापड संग अबीर गुलाल खूब उड़ता है।
सभी के जीवन में होली के रंगों की तरह उमंग, हर्ष और प्यार बना रहे। सभी को होली की शुभकामनायें।

कौशल 'हर्फ़ ' उप्रेती
बेरीनाग , उत्तराखंड

होली की कुण्डलियां

होली की कुण्डलियां
मनाओ सब मिल होली

पिचकारी की धार से उड़ता रंग गुलाल
भेदभाव को भूलकर मन में भरो उछाल।

मन में भरो उछाल, मनाओ सब मिल होली,
पकवानों की गंध लगे हर मुख रंगोली।

खूब मनाए मोद, राधिका संग बनवारी,
रहे ना कोई श्वेत, भरो ऐसी पिचकारी।

रंग बरसे जब प्रेम, मिटे बैर-विद्वेष,
हो स्नेह भरी फाग, बने मधुर परिवेश।

कुंभ भरे सुख-शांति, बहें प्रेम की धार,
हर घर मंगल गूँज, मिटे मन का भार।

सद्भावना के रंग, करें नव चेतन,
हर आँगन मुस्काए, हर मुख हो मधुबन।

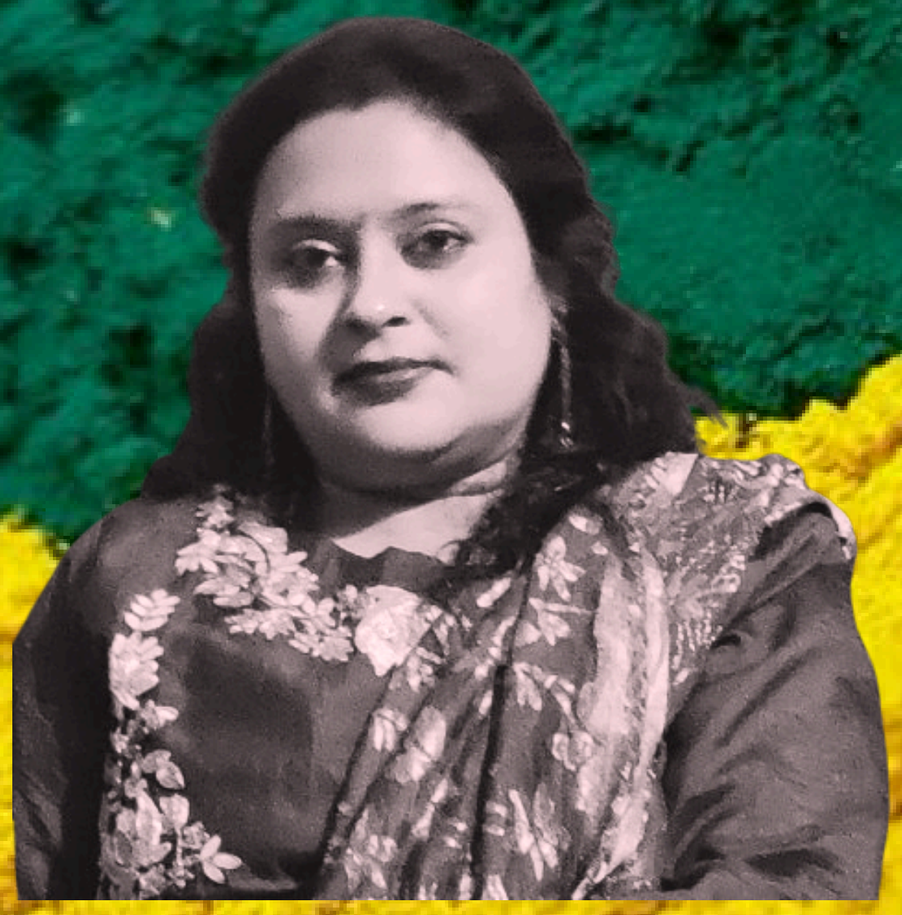

ज्योति सिंह
(जबलपुर-मध्यप्रदेश)

होली की ग़ज़ल

समस्त देशवासियों को होलिकोत्सव की हार्दिक शुभकामनाओं सहित प्रस्तुत है ग़ज़ल

दिलों को दिलों से मिलाती है होली।
सदा कर्म अच्छे सिखाती है होली।

बुराई का तन-मन जलाती है होली ।
मुहब्बत का पैग़ाम लाती है होली।।

नये फूल-बूटे खिलाती है होली ।
नया साल भी साथ लाती है होली।।

खिले जा रहे हैं मुसर्रत से चेहरे।
ख़ुशी के रंगों में नहाती है होली।।

गुलाबों के मुखड़े गुलाबी हुए हैं ।
मुहब्बत की कलियां खिलाती है होली।।

मुसलमान , हिन्दू, इसाई या सिख हों ।
सभी के दिलों को लुभाती है होली।।

जिधर देखिए मौसम-ए- गुल है 'मधुकर '।
बहारों का मौसम भी लाती है होली।।

लव वर्मा
हाथरस(उत्तरप्रदेश)

पाठकों के पत्र

सम्पादक जी,
आपके सम्पादन में जनवरी महीने में शीतकालीन विशेषांक पत्रिका पढ़ी। निसंदेह उत्कृष्ट लगी, हालांकि आपका यह पहला प्रकाशन था। रचनाकारों क़ी रचनाएँ कविताएं उच्च स्तर क़ी लगीं ख़ास तौर पर शीतकालीन दिल्ली प्रदूषण के बारे में काफ़ी संवेदनशील और बढ़िया है। आपको शुभकामनायें...!अगला अंक भी पढ़ना ज़रूर चाहूंगा
अच्युत वर्मा(एडवोकेट)
उदयपुर(राजस्थान)

नमस्ते अंशु जी
आपके फेसबुक पर कल्प पत्रिका पढ़ी। यह मेरी मित्र ने मुझे फॉरवर्ड किया था। सचमुच पढ़कर मैं खो सी गई।ऐसा लगता है कि कल्प लगभग अपने लिए अलभ्य है। मैं भी कल्प के लिए कुछ कविताएं भेजना चाहूंगी, कृपया अपनी पत्रिका के लिए स्थान दें.।
रचना अवस्थी-लखनऊ(उप्र)

नमस्कार त्रिपाठी जी!
कल्प का प्रथम अंक प्रकाशित हो गया..!बहुत बधाई। मैंने काफ़ी विस्तार से पढ़ा। ऐसा महसूस हुआ कि पूरा विषयवस्तु शीतमय हो रहा था। मगर कल्प को राष्ट्रीय प्रादेशिक ही नहीं, कल्प को अंतराष्ट्रीय स्तर पर डिस्ट्रीब्यूशन और मार्केटिंग व्यापक स्तर पर करना चाहिए।
सादर
अमरदीप सरकार-कोलकाता(पब)

शुभकामनायें अनुजा जी!
हिंदी साहित्यिक सामाजिक पत्रिका(शीत विशेषांक)सफ़ल एवं लोकप्रिय रही। ऊपर से रुचिकर भी। अंत में विशेष तौर पर खाने का स्वादिष्ट व्यंजन पढ़कर मुंह में पानी आ गया। लेकिन एक सलाह देना चाहूंगा कि प्रथम अंक शीतकालीन विशेषांक रुचिकर लगा। अगले अंक में त्यौहार पर टिके हुए विशेषांक भी बनाया जाना चाहिए चूँकि भारत वर्ष सांस्कृतिक त्यौहारों का देश है। कृपया वार्षिक सब्सक्रिप्शन के बारे में विस्तार से समझायें। मैं लेना ज़रूर चाहूंगा।
उग्रसेन द्विवेदी बीकानेर राजस्थान

आदरणीया अंशु त्रिपाठी जी
आपकी हिंदी पत्रिका कल्प का विमोचन हो गया वह भी साल के शुरुआत में.. पत्रिका का विषयवस्तु उच्चकोटि की हैं। सबसे बड़ी बात.. यह ऑनलाइन पीडीएफ पत्रिका मुफ़्त में पढ़ी जा सकती है, जैसे कोई ट्रेन में, गार्डन में अपने कमरे में, दिन में या रात में अपनी सुविधानुसार और वह भी मुफ़्त में पढ़ सकते हैं। कल्प मैगज़ीन का आईडिया बहुत बढ़िया लगा। अगले अंक के लिए इंतज़ार करूंगी औरअपनी सारी सहेलियों को शेयर भी करूंगी।
प्रिया श्रीवास्तव-, भोपाल(मप्र)

नमस्कार अंशु त्रिपाठी जी,
मुझे अपने दोस्त से आपके सम्पादन में कल्प पत्रिका प्राप्त हुई। बहुत दिनों के बाद कुछ अलग उच्चस्तरीय पत्रिका पढ़ने को मिली। लेकिन इस मैगज़ीन में किसी विशेष के साथ छोटी छोटी वीडिओ भी दिखाना चाहिए, और भी इंट्रेस्टिंग हो जायेगा।
निशांत चतुर्वेदी-खार वेस्ट (मुंबई)

नमस्ते अंशु जी,
आपकी साहित्यिक सांस्कृतिक त्रैमासिक पत्रिका का जनवरी में विमोचन हो गया। मैंने विस्तार से पढ़ा। निश्चित ही यह एक शीतकालीन विशेषांक पर टिकी हुई यह एक साहित्यिक पत्रिका है। शीतकालीन विशेषांक पर आपकी टीम ने चुना और पूरा न्याय भी किया।
अगले अंक की प्रतीक्षा में
सत्यनारायण बाजपेयी
बुदनी (मप्र)